Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

229

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

CHAKITSAJAN G.K.

2/226

...a Foundation Che...
...in. Gurukul Kangri C...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि
न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या 226..   आगत संख्या 0.96.94

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३० वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा ५० पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्रीः ॥

वैद्यवर विद्यापतिप्रणीत-

चिकित्साञ्जन ।

रसेन्द्रचिन्तामणि, परमाणुतत्त्वविज्ञानादि ग्रंथोंके अनुवादक, मुरादाबादनगरनिवासी पण्डित बलदेवप्रसाद मिश्रकृत-

भाषाटीकासहित ।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने,

बम्बई

खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन,

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयंत्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९६८, शके १८३२

इसका सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालया-

ध्यक्षने स्वाधीन रक्खा है.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्रीः ॥ 04694

वैद्यवर विद्यापतिप्रणीत–

चिकित्साऽञ्जन।

रसेन्द्रचिन्तामणि, परमायुतत्त्वविज्ञानादि-
ग्रंथोंके अनुवादक, मुरादाबादनगरनिवासी
पण्डित बलदेवप्रसाद मिश्रकृत

भाषाटीकासहित।

जिसको

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

खेतवाड़ी ७ वीं गली खम्बाटा लेन

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशितकिया।

संवत् १९६८, शके १८३३.

इसका सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालया-
ध्यक्षने स्वाधीन रखाहै।

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
वैद्य धर्मदत्त स्मृति संग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

D
226

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका ।

महर्षि अग्निवेशने अपने अंजननिदान नामक ग्रंथमें संक्षेपसे रोगनिदान लिखा है,परन्तु चिकित्साका किंचित् भी वर्णन नहीं किया । इस ग्रंथको देखकर उपाध्याय श्रीविद्यापतिके मनमें ऐसा विचार उत्पन्न हुआ कि निदानके साथ चिकित्साका होना अत्यन्तही उचित होगा । यह विचार इसही अंजननिदानका अनुसरण कर चिकित्साञ्जन नामक ग्रंथ उक्त कविने बनाया । इस ग्रंथमें चरक, सश्रुत व और दूसरे ग्रंथोंसे सार लेकर चिकित्सा कही है । यद्यपि इस ग्रंथमें उपाय थोडे हैं, परन्तु समस्तही गुण करनेवाले हैं । और कितनेही उपायोंकी ग्रंथकारने स्वयम् परीक्षा कर देखीहै ।

संक्षेपसे इस छोटीसी पुस्तकमें प्रायः सबही रोगोंकी चिकित्सा कहीगई है । केवल अंजननिदान और चिकित्सांजन ग्रंथको ही भलीभाँति कंठस्थ करलेनेसे प्रत्येक रोगकी चिकित्सा भली भाँतिसे कीजा सकतीहै । अंजननिदानका भाषान्तर पं०रामस्वरूप जीने कुछ दिन हुए किया था जो कि इसी यंत्रालयमें मुद्रित हुआ है, और आज यह चिकित्सांजन नामक ग्रंथभी पाठकगणोंको समर्पण किया जाता है । इसको पढकर मेरे परिश्रमको सफल कीजियेगा ।

इस पुस्तकको पढकर आपको भली भाँतिसे ज्ञात होजायगा कि जिन रोगोंकी चिकित्सा करानेके लिये हमको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैकड़ों हजारों रुपये डाक्टरोंको भेंट करने पड़तेहैं, वही रोग आयुर्वेदकी चिकित्साके अनुसार आने दो आनेकी दवाईमें चंगे हो सकतेहैं । गृहके आँगनमें, छतों पर व आसपास जो तृणादि लगे रहतेहैं, यह भी कभी २ सहस्रों रुपयेका काम देकर घोरकठोर रोगोंको दूर करदेतेहैं । ऐसी सुलभसाध्य चिकित्साको छोड़कर न जानें हमलोग किस कारणसे धर्मके नाश करनेवाली विलायती चिकित्साके मोहजालमें फँसे हैं ।

जिनके ऊपर सर्वसाधारणका बड़ाभारी विश्वासहै, जोजाति आज विद्या, कला, वैद्यक, कौशल (चतुराई)में संसार शिरोमणि गिनी जातीहै, देखिये तो उसही अंगरेज जातिके महात्मा लोगोंने हिन्दोस्थानके वैद्य और कविराजोंको इस मर्मके पत्र लिखेहैं, हमने योरुप और अमेरिकामें गत २० वर्षके बीच जिन नवीन औषधियोंका आविष्कार (ईजाद) किया है, इस कारण सर्वसाधारण हमारी चिकित्साकी प्रशंसा करते और हमारी विद्वत्ताका गौरव करतेहैं, परन्तु आश्चर्यका विषय है कि इससे बहुत शताब्दी पहलेही भारतवर्षके ऋषिगणोंने इन औषधियोंका आविष्कार किया ।

अमेरिकाके अन्तर्गत फिलाडेलफिया नामक नगरके बहुदर्शी, निपुण और प्रसिद्ध डाक्टर जार्ज, एच, क्लार्क, एम, ए, ऐम, डि. महोदयने कविराज अविनाशचन्द्र कविरत्नकृत चरकके अंगरेजी अनुवादको देखकर उक्त महाशयको यह पत्र लिखा—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

DEAR DOCTOR,

"As I go over each fasciculus I always arrive at one conclusion and that is this:—

If the Physicians of the present day would droff the Pharmacopia all the modern drugs and chemicals, and treat their Patients according to the methods of "charaka" there would be less work for the undertakers, and fewer chronic invealid in the world."

"प्रिय कविराज !

मैं आपका प्रत्येक खण्ड अंगरेजी चरक पढ़कर एक ही सिद्धान्तपर आताहूं । वह सिद्धान्त यह है:—

यदि आजकलके चिकित्सक लोग अपनी औषधियोंकी श्रेणीसे आजकलकी (बनी) समस्त औषधि और रासायनिक पाकादिको छोड़कर चरकके मतानुसार चिकित्सा करें तो शववाहकका कार्य बहुत कम होजाय, और पृथ्वीमें चिररोगियोंकी संख्या न्यून्य हो ।"

केवल अमेरिकाका क्लार्क ही नहीं; जर्मनी, फ्रांस, ग्रीस, सुरडेन, डेन मार्क, इंग्लैण्डादि पृथ्वीके प्रायः समस्त सभ्यदेशके गार्वि, जेकवि, वार्थ, सेन्टहेलियर, भयेस, एडग्रेन, सरन्, सरनसेन्, ज्याकशन और पलवार्थलम आदि और भारतवर्षके सिविलियन स्काइन और कफट् आदि, इसके अतिरिक्त यूरप और अमेरिकाके प्रायः अधिकांश प्रसिद्ध चिकित्साविषयक मासिक और साप्ताहिक पत्रिकाओंमें—

किसीने कहा है कि " भारतवर्षके चरक नामक चिकिग्रंथमें केवल ६०० विरेचक अर्थात् दस्तकारक औष-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धियाँ हैं, नहीं ज्ञात होता कि, भारतीय चिकित्सा शास्त्रका ज्ञान कितनी असीम भीतके ऊपर स्थापित है । ”

किसीने लिखा है । “ उन्नतिशील वर्त्तमान पाश्चात्य चिकित्साप्रणालीको लेकर हम कितना ही ठाट करें, परन्तु बहुशताब्दी पूर्व आविष्कृत भारतीय चिकित्साप्रणालीकी अनेक बातोंको देखकर अबतक हमैं लाजसे मस्तक नवाना पड़ताहै । ”

किसीका यह मत है; “कैसे आश्चर्यकी बात है ? हम लोग जिन नवीन औषधियोंका अपने आपको बनानेवाला जान कर मनमें बड़ा ही गर्व करतेहैं, उनमेंसे अधिकांश औषधियोंके भारतीय ऋषिगण सैकड़ों वर्ष पहले प्रचार करगये हैं ।”

अमेरिका और योरुपके बड़े २ डाक्टर तो यह कहतेहैं, अब एक बार भारतवर्षके सिविलियन लोगोंका भी मतामत पाठकर देखिये । भागलपुर डिवीजनके वर्त्तमान कमिश्नर श्रीयुत स्काइन साहब लिखतेहैं, –

My dear sir.

"It is wonderful to note the comparatively advanced views help by the sages of your country and how completely they had anticipated discoveries which we moderns fleater ourselves are due to the enlightenment of this age."

“प्रिय महाशय !

यह अति आश्चर्यका विषय है कि, आपके ऋषिलोग बहुत शताब्दियोंके पहले जिन बातोंको जानेथे, पाश्चात्यदेशवासी और सभ्यताभिमानी हमलोग अपने आपको उन विषयोंका आविष्कारक जानकर गर्व करतेहैं । ”

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार पृथ्वीके सभ्य देशोंसे सैकड़ों हजारों विज्ञानी पंडितगण भारतीय चिकित्साका गुण गान कररहे हैं । और हम भारतवासी बराबर अपने नेत्रोंसे देशीय औषधियोंके असाधारण गुण देखकर भी देशीय चिकित्साके अनादर करनेका मार्ग बनातेहैं इससे अधिक क्षोभ और पछितावेसे दूसरी कौनसी बात हो सकतीहै ?

हे भारतवासीगण ! नेत्र खोलो ! पहले अच्छी तरहसे देखलो कि देशमें कैसे पदार्थ हैं । विलायत, अमेरिका या अंगरेजोंके नामपर ही मोहित न बनो । जो कमी है उसको पूरा करो, परन्तु मूर्खकी समान बनकर गृहलक्ष्मीको पाँवसे न दबाओ । हे पाश्चात्यसभ्यता ! तैंने किस कुघड़ीके मध्य भारतवर्षमें पांव रक्खाथा । तेरे ही प्रभावसे अनन्तफलदायिनी आयुर्वेदीय चिकित्सा अपनी जन्मभूमि भारतवर्षमें भारतकी कुसन्तान द्वारा श्रद्धा और आदरहीन होकर मृतकसी होरही है और तुम्हारी ही ऐन्द्रजालिक मायामें फँसकर वैद्यगण स्वार्थ और संसारीपनके कीड़े होकर आयुर्वेद चिकित्साको कलंकित करनेके लिये विराजमान हैं ।

भूमिकाके उपसंहारमें सानुनय निवेदन किया जाताहै कि जहांतक बनपड़े, भारतीय चिकित्साकी ओर ध्यान दो, इससे ही सब प्रकार वैद्यकविद्याकी उन्नति होगी और सब प्रकारके रोग शोकादि नाशको प्राप्त होंगे ।

८ जौलाई
सन१८९६

बलदेवप्रसाद मिश्र
मोहल्ला–दीनदारपुरा,
मुरादाबाद ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण ।

मैं अत्यन्त विनय और नम्रतासे भाषाटीकासहित यह ग्रन्थ सर्वाधिकार सहित अपने परममित्र, परोपकारी, "श्रीवेंकटेश्वर" यन्त्रालयाधिप खेमराज श्रीकृष्णदासजीको अर्पण करताहूं ।

बलदेवप्रसाद मिश्र-मुरादाबादी.

सम्मति ।

भारतभैषज्यभास्कर, रसरत्नाकर, रसेन्द्रसारसंग्रह व अर्कप्रकाशादि ग्रंथोंके अनुवादक भिषक्श्रेष्ठ वैश्यवंशावतंस शालिग्रामजी चिकित्साञ्जन ग्रंथकी भाषाटीका पढकर लिखतेहैं-

"मैंने चिकित्सांजन नामक ग्रंथकी भाषाटीका लिखित कापी देखी, वास्तवमें टीका अतिसुन्दर, सरल और समयोपयोगी हुई है । बलदेवप्रसाद मिश्रको मैं बहुत दिनसे जानताहूं । इन महाशयने संस्कृत पुराण, इतिहास, काव्य, नाटकादिकीटीका, अनुवाद करके हिन्दीभाषाका महान् अभाव दूर किया है। आयुर्वैदिक ग्रंथोंमें ढुंढुकनाथ सिद्ध विरचित रसेन्द्रचिन्तामणिका अनुवाद जो मिश्रजीने किया है विशेष उल्लेखयोग्य है ।"

शालिग्रामवैश्य।
मुरादाबाद.

ता० १।७।९६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ श्रीः ॥

अथ चिकित्साञ्जन ।

भाषाटीकासहित ।

मंगलाचरण ।

सहस्रकरसंशोभिधनुर्बाणमभीष्टदम् ।
कार्त्तवीर्यार्जुनं वंदे रक्ताम्बरविभूषणम् ॥ १ ॥

जिसके सहस्र हाथोंमें धनुष बाण शोभायमान हैं तथा जो लाल रंगके वस्त्रोंसे विभूषित है ऐसे अभीष्टफलको देनेवाले कार्त्तवीर्यार्जुनको मैं प्रणाम करताहूँ ॥ १ ॥

ग्रंथका उपक्रम ।

चिकित्साज्ञानतिमिरच्छन्ननेत्रप्रसादनम् ।
भिषजां प्रीतये सूक्ष्मं योगांजनमिहोच्यते ॥ २ ॥

चिकित्सा करनेका जो ज्ञान है वह अज्ञानरूपी तिमिररोगसे ढकेहुए नेत्रको निर्मल करनेवाला यह छोटा चिकित्सांजन ग्रंथरूपी सूक्ष्म योगाञ्जन वैद्योंके आनन्दार्थ यहांपर कहाजाताहै अर्थात् इस लघु ग्रंथमें अनेक प्रकारके रोगोंके पृथक २ उपाय कहेजायँगे ॥ २ ॥

इस ग्रंथके प्रयोगोंकी उत्पत्ति ।

ये प्राकृतैर्वैद्यवचोभिरुक्ता योगाःसतामत्र भवन्तिचान्ये
प्राचीनवैद्याभिहितास्तथान्येविद्यापतेर्येबहुशोऽनुभूताः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन औषधियोंके प्रयोग अर्वाचीन वैद्योंके मुखसे मैंने सुने हैं तथा नवीन बुद्धिमान्, वैद्योंने जो प्रयोग कहेहैं वह सब इस ग्रंथमें लिखेहैं, चरकादि प्राचीन वैद्योंने जो प्रयोग कहेहैं तथा विद्यापतिभट्टने स्वयं नवीन योग करके जिनकी परीक्षा ले देखीहै वह सब इस ग्रंथमें लिखेहैं ॥ ३ ॥

नाडीपरीक्षा ।

अंगुष्ठमूलभागे या धमनी जीवसाक्षिणी ।
तच्चेष्टयासुखं दुःखं ज्ञात्वा कुर्याच्चिकित्सितम् ॥४॥

अंगूठेकी जडमें जो जीवसाक्षिणी नाडी है तिसके धमकनेकी गतिसे मनुष्यका सुख दुःख जानकर वैद्यको तिसकी उचित चिकित्सा करनी चाहिये ॥ ४ ॥

प्रथम रोगज्ञानकी आवश्यकता है ।

रोगज्ञानार्थमेवादौ यत्नः कार्यो भिषग्वरैः ।
ततस्तस्मिन् क्रियारंभः पुण्याय यशसे श्रिये ॥५॥

प्रथम उत्तम वैद्योंको यह जाननेका यत्न करना चाहिये कि रोगीको किस प्रकारका रोग हुआ है और फिर उस रोगीके ऊपर औषधादि क्रियाके प्रयोग करनेका आरंभ करना उचित है । इस प्रकारका व्यवहार करनेसे पुण्य, यश और लक्ष्मीकी प्राप्ति होतीहै ॥ ५ ॥

औषधिकी भी परीक्षा करनी चाहिये ।

रोगमादौ परीक्षेत ततोऽनंतरमौषधम् ।
ततः कर्म भिषक् पश्चात् ज्ञानपूर्व समाचरेत् ॥६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वैद्यको उचित है कि प्रथम रोगीके रोगकी परीक्षा करे फिर औषधिकी परीक्षा करे कि वह सडी गली अथवा घुनी तो नहीं है? । इस प्रकार रोग तथा औषधिका ज्ञान प्राप्त करके वैद्यको औषधयोजनादि कर्म करना उचित है ॥ ६ ॥

अथ नाडीपरीक्षा ।

किस प्रकारसे नाडीपरीक्षा करनी चाहिये ।

स्त्रीणां भिषग्वामहस्ते दक्षिणे पुरुषस्य हि ।
परीक्षेद्यत्नतश्चैवमभ्यासादेव जायते ॥ ७ ॥

वैद्यको उचित है कि, स्त्रीकी नाडीपरीक्षा बायें हाथपर और पुरुषकी नाडीपरीक्षा यत्नपूर्वक दायें हाथपर करे। इस प्रकार परीक्षा करनेकी समझ अभ्याससे अर्थात् वारम्बार नाडी देखनेके प्रसंगसे होतीहै ॥ ७ ॥

वातादिक दोषकी नाडियोंके स्थान ।

अग्रे वातवहा नाडी मध्ये वहति पित्तजा ।
कफजांते विशेषेण केचिदेवं प्रचक्षते ॥ ८ ॥

सबसे आगे चलनेवाली नाडीको वायुकी, बीचमें चलने वाली नाडीको पित्तकी तथा अंतभागमें चलनेवाली नाडीको कफकी कहतेहैं, ऐसा कितने एक आचार्योंका मत है । अर्थात् अंगूठेकी जडके आगे तीन उँगलियें नाडीके ऊपर रक्खो । जो धडक पहली उँगलीके नीचे यानी अँगूठेकी ओर होवै तो वायुकी नाडी, बीचकी उँगलीके नीचे हो तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पित्तकी और पिछली उँगलीके नीचे धडक हो तो कफकी नाडी जानो ॥ ८ ॥

वातादि दोषोंमें नाडीकी गति ।

सर्पजलौकादिगतिं वदन्ति विबुधाःप्रभंजने नाडीम् ।
पित्तेन काकलावकमण्डूकादेस्तथा चपलाम् ॥ ९ ॥
राजहंसमयूराणां पारावतकपोतयोः ।
कुक्कुटस्य गतिं धत्ते धमनी कफसंगिनी ॥ १० ॥

बुद्धिमान् वैद्यजन ऐसा कहतेहैं कि, वायुका कोप होनेसे नाड़ीकी गति सांप और जोंककी समान जाननी । पित्त कुपित होनेसे काग, लवा तथा मेंड़ककी समान गति चपल होतीहै। कफका कोप होनेसे राजहंस, मोर, पारावत, कबूतर, मुरगा इनमेंसे प्रत्येक जानवरकी गतिके समान नाड़ीकी गति होतीहै ॥ ९ ॥ १० ॥

द्विदोष, त्रिदोष और ज्वरकी नाड़ी ।

संसर्गे सन्निपाते च तद्वत्रिगतिगामिनी ।
ज्वरवेगेन धमनी सोष्णा वेगवती भवेत् ॥ ११ ॥

वातपित्त, वातकफ या पित्तकफ, ऐसे दो दोष एक साथ कोपे होंय तो नाड़ीमें उन दोनों दोषोंकी गति दिखाई देतीहै, तीन दोष कुपित हुए हों तो नाडीमें तीन दोषोंकीसी गति दिखलाई देतीहै, ज्वरका वेग होवे तो नाड़ी गरम और वेगसे चलनेवाली मालूम पड़तीहै ॥ ११ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामसे और मनोविकारसे नाड़ीकी गति ।

कामात् क्रोधाद्वेगवहा क्षीणा चिन्ताभयाप्लुता ।
मंदाग्नेः क्षीणधातोश्च नाड़ी मंदतरा भवेत् ॥ १२॥

कामविकारसे और क्रोधविकारसे नाड़ी वेगसे चलतीहै, चिन्ता और भयसे क्षीण चलतीहै । जिसकी जठराग्नि धीमी पडगई हो, जिसकी धातुक्षीण होगई हो उसकी नाडी तिससेभी धीमी चलतीहै ॥ १२ ॥

रक्तपूरित आदि नाडियोंकी गति ।

असृक्पूर्णा भवेत्कोष्णा गुर्वी सामा गरीयसी ।
लघ्वी वहति दीप्ताग्नेस्तथा बलवतो मता ॥ १३ ॥

जिस मनुष्यकी नसें रुधिरसे भरीहुई हों उस मनुष्यकी नाड़ी थोड़ी २ गरम होकर भारी यानी थोड़े वेगसे चलतीहै; जिसके शरीरमें आम यानी अपक्व दोष हों, उसकी नाड़ी इससे भी मन्द चलतीहै । जिसकी जठराग्नि प्रदीप्त होवे तथा जिसका शरीर बलवान् होवे उसकी नाड़ी हलकी चलतीहै अर्थात् न बहुत वेगसे और न बहुत धीमी होकर चलतीहै ॥ १३ ॥

क्षुधित और तृप्तकी नाड़ी ।

चपला क्षुधितस्य स्यात्तृप्तस्य वहति स्थिरा ।

क्षुधित मनुष्यकी नाडी चपल चलतीहै, भोजन करके संतुष्ट हुएकी नाडी स्थिर और विना धमककी धीरे २ चलतीहै ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाडीकी प्राणनाशक गति ।

स्थित्वा स्थित्वा वहति या सा ज्ञेया प्राणनाशिनी १

अटक २ कर चलतीहुई नाडीको प्राणघातक जानना चाहिये ॥ १४ ॥

सन्निपातकी नाड़ीका लक्षण ।

काष्ठकुट्टो यथा काष्ठं कुट्टते चातिवेगतः ।
मन्दं मन्दं तथा नाडी सन्निपातेन जायते ॥ १५ ॥

जैसे बढ़ई किसी समय काठको बडे वेगसे कूटता है, किसी समय धीमें वेगसे कूटताहै, ऐसी नाडी जो किसी समय बड़े वेगसे और किसी समय बहुत धीमें २ चलतीहै, वह नाडी सन्निपातकी जाननी चाहिये ॥ १५ ॥

नाडीकी गतिको देखकर जीवित और मृतकके समझनेकी रीति।

स्पंदते चैकमानेन त्रिंशद्वारं यदा धरा ।
स्वस्थाने जीवनं मृत्युं वदेन्मध्ये यदान्यथा ॥ १६ ॥

जो रोगी अत्यन्त रुग्ण हो तो उसकी नाडीको पकड़कर एक अंकसे लेकर तीस अंकतक गिने । जो इस गिनतीके बीचमें नाडी अटकै नहीं और अपनी जगहपर इकसार धडके तो जानो कि रोगी जियेगा परन्तु जो उपरोक्त गिनतीके समयमें नाडी अटक जाय या स्थानसे विचलित होजाय तो रोगी (बारह घण्टेके भीतर) मरजायगा ॥ १६ ॥

इति नाडीपरीक्षा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ मूत्रपरीक्षा ।

मूत्रमें तेल डालनेसे साध्यासाध्यकी परीक्षा ।

मूत्रे तैलं विकासि स्याच्चूर्णं साध्योऽविकासि चेत् ।
कृच्छ्रसाध्योऽथतलगे तत्रासाध्यो रुजान्वितः १७॥

मूत्रमें तेलकी बूंदें डालै, जो बूँदें मूत्रके ऊपर फैलजायँ तो रोगीको शीघ्र आराम होगा । जो तेलकी बूंदें फैलें नहीं स्थितिमें रहैं तो उस रोगको कष्टसाध्य जानना जो तेलकी बूंदें मूत्रके नीचे बैठजायँ तो समझना चाहिये कि रोग असाध्य है ॥ १७ ॥ ❀

वातादि दोषोंमें मूत्रके वर्णादि ।

रूक्षं नीलं वातकोपे पित्ते पीतारुणं कफे ।
श्वेतं स्निग्धं पलालांभःसदृशं रक्तकोपतः ।
स्निधोष्णं रक्तसंसर्गे सन्निपाते यथेरितम् ॥ १८ ॥

वायुका कोप हो तो रोगीका मूत्र रूखा और लीले रंगका होताहै। पित्तका कोप होनेसे पीला या लाल होताहै । कफ-का कोप होनेसे श्वेत और स्निग्ध होताहै, रुधिरमें विकार हो तो मांसके रसकी समान मूत्रका रंग होताहै, जो मूत्रमें रुधिर मिला हो तो चिकना और गरम होताहै । मूत्रके रंगमें जिन

❀ कितने एक वैद्य कहतेहैं कि, जो तेल मूत्रमें फैल जाय तो रोग साध्य है, तलीमें बैठ जाय तो कष्टसाध्य है मूत्रमें तेल मिलजाय तो व्याधिको असाध्य जानना चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिदोषोंका वर्णन ऊपर किया है, सन्निपातमें वह सब दोष मिलेहुए दिखाई देतेहैं ॥ १८ ॥

असाध्य रोगीका लक्षण ।

निद्रानाशो निशायां प्रभवति च तथा कंठकूपे बलासो
देहे दाहोऽतिसूक्ष्मा लघुतरधमनी प्रस्खलंती च जिह्वा ।
ह्रीयंते यस्य शीघ्रं बलदहनमनः शक्तयश्चेंद्रियाणां
तद्भैषज्यं वदंति स्मृतमिह विबुधैः केवलं रामनाम ॥ १९ ॥

जिस रोगीको रातमें नीद नहीं आवै तथा जिसके कंठकूपमें कफ बलवान् होकर भरगया हो, शरीरमें आगसी जलती हो, नाडी धीमी २ और झीनी २ चलती होय, बोलनेमें जीभ लडखडाती हो, जिसके शरीरका बल, जठरकी अग्नि और मनकी शक्ति एकसाथ नाश होगई हो, इन्द्रियोंकी शक्ति जातीरही हो, ऐसे रोगीकी औषधि केवल रामका नाम है । ऐसा बुद्धिमान् वैद्य कहतेहैं ॥ १९ ॥

अथ वातचिकित्सा ।

रोगका कारण ।

(दोषाः वातपित्तकफाः धातवो रसासृङ्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणि ।)

दोषधातुमलमूत्रमिदं वै रोगयुक्तमृषिभिर्नृशरीरम् ।
तद्विकारमुपलक्ष्य भिषग्भिर्भेषजैरुपशमः करणीयः २०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वात, पित्त और कफ यह तीन दोष हैं; रस, लोहू, मांस, मेद, हड्डी, मज्जा और वीर्य यह धातु हैं। यह दोष, धातु और मल मूत्रसे बना हुआ मनुष्य शरीर है। दोष, धातु या मलके विकारके पानेसे शरीरमें रोग पैदा होताहै। इसकारण वैद्यको चाहिये कि, रोगको पहिचानकर औषधिसे उस विकारको दूर करे ॥ २० ॥

वायुके शमन करनेका उपाय।

तत्र तावदनिलः शममेति स्नेहवस्तिपरिषेकनिरूहैः। भुक्तमात्रबलदेन नराणामोदनेन मृदुमांसयुतेन ॥२१॥

यदि दोषोंसे वायुका कोप हुआ हो तो उस रोगीको स्नेहपान कराना चाहिये। यानी घी, तैलादिकी योग्यमात्रा (अधिकसे अधिक ४ तो.) पिलाना, अथवा स्नेहवस्ति देना चाहिये गरम पानीकी पोटली इत्यादिसे सेचन करना चाहिये, निरूहवस्ति देना चाहियें अथवा जो भोजन करते ही बल दे ऐसा भात या कोमल मांसका भोजन देना उचित है। क्योंकि इस उपचारसे वायुका कोप दूर होजाताहै ॥ २१ ॥

पित्तके दूर करनेका उपाय।

द्राक्षया त्रिफलया त्रिवृता च संसृतेन रुधिरस्रुतिभिश्च। सर्पिषा च पयसा सितया च स्वादुना भवति पित्तनिवृत्तिः ॥ २२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाख, हर्रे, बहेडा, आमला, निसोथ इनको समान भाग लेकर इनके ४ तोलेका काथ लगभग डेढ सेर पानीमें करके जब पाव भर पानी रहै तब उसको पीनेसे विरेचन होगा, तिससे पित्त शान्त होगा। और फश्त करानेसे भी पित्तकी शान्ति होतीहै। या घी, दूध, शक्कर और ऐसे ही दूसरे मधुर पदार्थोंके खानेसे तथा पीनेसे पित्तका शमन होताहै ॥ २२ ॥

कफके दूर करनेका उपाय।

लंघनेन वमनेन यवान्नप्राशनेन शिरसश्च विरेकैः।
कट्फलादिकवलैरहिमाभिश्चाद्भिरत्र शममेति कफश्च॥

उपवास करनेसे, वमन करनेसे, जौ खानेसे, शिरोविरेचन देनेसे, कायफल आदिका कवल भरनेसे और गरम पानीसे कफका शमन होताहै ॥ २३ ॥

अथ ज्वर चिकित्सा।

इस ग्रंथमें चिकित्सा कहनेका हेतु।

अग्निवेशेन भिषजा निदानांजनमद्भुतम्।
कृतं तेन मया ह्यत्र चिकित्सामात्रमुच्यते ॥ २४ ॥

वैद्य अग्निवेशने निदानांजन नामक अद्भुत ग्रंथ लिखाहै इस कारण मैं इस ग्रन्थमें चिकित्सामात्र कहताहूं। अर्थात् इस ग्रथमें जिस २ रोगकी चिकित्सा मैंने कहीहै, उस २ रोगका निदान "निदानांजन" ग्रथमें देखलेना, ऐसा मेरा अभिप्राय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्योंकि उस ग्रन्थमें जैसे चिकित्सा नहीं कहीहै तसही इस ग्रन्थमें निदान नहीं कहा है ॥ २४ ॥ *

ज्वरके आरंभमें चिकित्सा ।

ज्वरे लंघनमेवादौ कार्यमादोषपाकतः ।
ततः कषायैर्मतिमान् पाचनैः शमनैर्हरेत् ॥ २५॥

जबतक वातादि दोष पक्क हों तबतक ज्वरवालेको उपवास करावे । फिर बुद्धिमान् वद्यको चाहिये कि, उस दोषका पाचन करनेवाला तथा दोषका शमन करनेवाला क्वाथ रोगीको देकर उसका ज्वर मिटावै ॥ २५ ॥

ज्वरकी तरुणादि दशा ।

आसप्तरात्रात्तरुणं ज्वरमाहुर्मनीषिणः ।
मध्यं द्वादशरात्रि स्यात्पुराणमथ चोत्तरम् ॥२६॥

आरम्भसे लेकर सात रात्रियों तकके ज्वरको बुद्धिमान् वैद्यजन तरुणज्वर कहतेहैं। बारह रात्रितकके ज्वरको मध्यम ज्वर कहते हैं । इससे पीछेका ज्वर जीर्णज्वर कहाताहै ॥ २६ ॥

सर्वज्वरवालेकी सामान्य क्रिया ।

ज्वराणामेव सर्वेषां प्रथमंवातवर्जितम् ।
लंघनं चोष्णपानीयमिति धन्वतरेर्मतम् ॥ २७ ॥

---

* अग्निवेश मुनिने अपने निदानांजन नामक ग्रंथमें केवल संक्षेपसे निदान ही कहाहै चिकित्सा नहीं कही इस कारण चिकित्सांजनकारने निदानके अनुसार चिकित्सा कहीहै । अंजननिदान भाषाटीकासहित श्रीवेंकटेश्वर यंत्रालयमें मिलताहै । टीकाकार पं० रामस्वरूपजी मुरादाबादनिवासी हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातज्वरके अतिरिक्त शेष सर्व प्रकारके ज्वरवाले रोगीको प्रथम उपवास करावे तथा पीनेके लिये गरम कियाहुआ पानी देना चाहिये। यह धन्वंतरिका मत है ॥ २७ ॥

ज्वरमें वमनादि कब देना चाहिये ?।

ज्वरादौ वमनं दद्यात् ज्वरमध्ये तु पाचनम् ।
ज्वरान्ते रेचनं दद्यात् ज्वरमुक्ते तु भोजनम् ॥२८॥

ज्वरके आरंभमें वमन दे, मध्यमें पाचन औषधियों को देवे, ज्वरके अन्तमें विरेचन देवे, ज्वरके छूट जानेपर भोजन देना उचित है। (ज्वर उतरा हो या न उतरा हो, परन्तु रोगीकी इच्छाके अनुसार थोडा हलका भोजन सांझके समय देना चाहिये। कारण कि, लंघनके ही गुण लघुभोजनमें हैं। और जिस ज्वरमें केवल लंघन कराने हों उस ज्वरमें भोजन न देवे) ॥ २८ ॥

वातज्वरमें पाचन ।

गुडूचीपिप्पलीमूलनागरैः पाचनं स्मृतम् ।
दद्याद्वातज्वरे पूर्णे लिंगे सप्तमवासरे ॥ २९ ॥

गिलोय, पीपलामूल और शोंठ इनको बराबर लेकर इनके ४ तो० का क्काथ १६ गुणे पानीमें करे, जब आठ तो० शेष रहे तो उस सम्पूर्ण क्काथको वातज्वरके चिह्नवाले रोगीको सातवें दिन देवे॥ २९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पित्तज्वरका क्काथ ।

द्राक्षा हरीतकी मुस्ता कटुकी कृतमालकः ।
पर्पटश्च कृतः क्काथ एषां पित्तज्वरापहः ॥ ३० ॥

दाख, हरीतकी, मोथा, कुटकी, अमलतास, पित्तपापड़ा इन सबको बराबर ले चार तोलेका क्काथ सोलह गुणे पानीमें करके जब आठवाँ भाग शेष रहजाय तो उसे रोगीको पिला देवे, पित्तज्वरका नाश होजायगा ॥ ३० ॥

04691

वातकफज्वरका उपाय ।

आरग्वधकणामूलमुस्तातिक्ताभयाकृतः ।
क्काथः क्षपयति क्षिप्रं ज्वरं वातकफोद्भवम् ॥ ३१ ॥

अमलतास, पीपलामूल, मोथा, कुटकी, हरीतकी इन औषधियोंका क्काथ करके पीनेसे वातकफज्वरका शीघ्र नाश होजाताहै ॥ ३१ ॥

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

कफज्वरका उपाय ।

वासाक्षुद्रामृताक्काथः सक्षौद्रः कफजे ज्वरे ॥ ३२ ॥

वाँसा (विसोंटा) कटेरी छोटी, गिलोय इन औषधियोंका क्काथ करके तिसमें शहत डालकर खाय तो कफज्वर दूर होताहै ॥ ३२ ॥

श्री धर्मदत्त वैद्य संग्रह

आठ प्रकारके ज्वरपर क्काथ ।

क्षुद्रा किराततिक्ता च शुंठी छिन्ना च पाष्करम् ।
कषाय एषां शमयेत्पीतश्चाष्टविधं ज्वरम् ॥ ३३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी कटेरी, चिरायता, कुटकी, सोंठ, गिलोय, पुष्करमूल इन औषधियोंका क्काथ पीनेसे आठप्रकारके ज्वरका नाश होताहै ॥ ३३ ॥

जीर्णज्वरमें लघु सुदर्शनचूर्ण ।

त्रिकटु त्रिफला मूर्वा कण्टकारी निशामृता ।
शृंगी कर्चूरमधुकं पौष्करं सदुरालभम् ॥ ३४ ॥
कालाजाजी त्रायमाणा पर्पटागुरुपत्रकम् ।
बालकं कटुका मुस्ता देवदारु यवानिका ॥ ३५ ॥
पटोलातिविषा कृष्णा मूलत्वक् चित्रकं समम् ।
कैरातं सर्वतोर्द्धं स्याच्चूर्णं लघुसुदर्शनम् ॥ ३६ ॥
जीर्णज्वरं मोहतंद्रां दाहं श्वासं भ्रमान्वितम् ।
कासं क्लमं कामलांश्च पाण्डुतां च तृषं रुजम् ॥३७॥
सन्निपातसमुत्थांश्च विकारानाशु नाशयेत् ॥३८॥

सोंठ, पीपल, मिर्च, हरीतकी, बहेडा, आमला, चुरणहार, मरोरफली, छोटीकटेरी, हलदी, गिलोय, काकड़ासिंगी, कचूर, मुलहठी, पुष्करमूल, धमासा, कालीजीरी, त्रायमाण, पित्तपापडा, अगर, तमालपत्र, खश, कुडेकी छाल, मोथा, देवदारु, अजवायन, परवल, अतीस पीपलामूल, तज, चित्रक इन सब औषधियोंको समान लेवे इन सबसे आधा चिरायता ले। इस चूर्णका नाम लघुसुदर्शनचूर्ण है । आधा तोला इस चूर्णको लेकर पानीके साथ खानेसे जीर्णज्वर, मोह, तंद्रा, दाह, श्वास, भ्रम, खाँसी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रम, सब प्रकारका कामला, पाण्डुरोग और प्यासकी पीडा मिटतीहै। यह चूर्ण सन्निपातसे उत्पन्न हुए विकारोंका भी नाश करताहै ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥

सर्वज्वरमें महाज्वराङ्कुश रस ।

शुद्धं सूतं विषं गंधं धूर्त्तबीजं त्रिभिः समम् ।
चतुर्भ्यो द्विगुणं व्योषं चूर्णं गुंजाद्वयोन्मितम् ॥३९॥
आर्द्रकस्य रसैः किंवा जंबीरस्य रसैर्युतम् ।
महाज्वरांकुशः सर्वज्वरघ्नः सन्निपातजित् ॥४० ॥

शुद्ध कियाहुआ पारा, बच्छनाग, गन्धक इनको बराबर ले। इन तीनोंके समान धतूरेके बीज लेना। इन चारोंसे दूनी व्योष (शोंठ, मिर्च, पीपल,) लेना। सबको बारीक पीसकर चूर्ण करना (पहले पारेके साथ गन्धकको पीसे फिर बच्छनागके साथ मिर्च पीसे) यह चूर्ण आर्द्रकके रसमें अथवा जंबीरी नीबूंके रसमें दो रत्ती प्रमाण देना चाहिये। इस रसको महाज्वरांकुश कहतेहैं। इससे सब प्रकारके ज्वर दूर होतेहैं तथा सन्निपातज्वर जातारहताहै ॥ किसी २ टीका-कारने लिखाहै कि रोगीको दूध, भातका पथ्य दे३९।४०॥

तालकं शुक्तिकाचूर्णं तुल्यमत्रोभयोरपि ।
नवमांशं च तुत्थं स्यान्मर्दयेत्कन्यकाद्रवैः॥४१ ॥
तच्छुष्कमुपलैरेव वन्यैर्गजपुटे पचेत् ।
शीतं गुंजामितं शीतज्वरघ्नं सितया सह ॥ ४२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथ्यं सितादधियुतं भक्तं मध्यंदिने पुनः ।
वान्तिर्भवति कस्यापि भूतभैरवसंज्ञके ॥ ४३ ॥

शुद्ध कीहुई हारिताल और सीपीभस्मका चूर्ण इन दोनों-को समान भाग ले । इन दोनोंका नवां अंश शुद्ध कियाहुआ नीलाथोथा ले । फिर सबको घीकारके गूदेमें घोटे । फिर दोनोंको शरावसम्पुटमें रखकर (अन्ने उपलोंकी) अग्निसे गजपुटमें डालकर पकावे, ठंढा होनेपर इस औषधिको २ रत्ती ले खांडके साथ खाय । इससे शीतज्वरका नाश होताहै, उस दिन रोगीको दही, शक्कर और भात खानेको दे । इस रसके खानेसे किसी २ को वमन होता है, किसीको नहीं होता । इस रसका नाम भूतभैरवरस है ॥ ४१ ॥ ४२॥ ४३॥

सन्निपातज्वरपर गुटिका ।

कृष्णाशिलानिंबबीजंगुटिका कारवेल्लजैः ।
रसैः कृता सन्निपातज्वरघ्नी समुदाहृता ॥ ४४ ॥

पीपल, मैनशिल, निबौलियोंकी मींग इन सबको बराबर कर करेलेके पत्तोंके रसमें दो दिन घोटै । फिर दो २ रत्तीकी गोली बनाय छायामें सुखावे । इस एक गोलीको खाकर थोडासा गरम पानी पिये तो सन्निपातज्वरका नाश होताहै ॥ ४४ ॥

पित्तज्वरपर हिम ।

एकः पर्पटकः पीतः पित्तज्वरविनाशकः ।
किं पुनर्यदि युज्येत चंदनोशीरधान्यकैः ॥ ४५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार तोला पित्तपापड़ा लाकर सांझको मिट्टीके वर्त्तनमें पावभर पानीमें भिगो रक्खे। फिर सवेरे उस पानीसे वह पित्तपापड़ा निकालकर उस पानीको नितारकर पीले। ऐसा करनेसे पित्तज्वरका नाश होजाताहै। जो पित्तपापड़ा एक तोला, सफेद चन्दन एक तोला, खश एक तोला और धनियां एक तोला इन सबको इसी प्रकार भिगोकर सवेरे पिये तो पित्तज्वरके मिटनेमें क्या आश्चर्य है? (धनियाँकी जगह कोई २ शोंठ लेनेको कहतेहैं। क्योंकि "चंदनोशीरनागरैः" ऐसाभी पाठ है)॥ ४५॥

कफज्वरपर नस्य।

व्योषकट्फलनस्यं स्यात् कफज्वरशिरोरुजि॥४६॥

सोंठ, पीपल, मिर्च, कायफल इन सबको बराबर ले बारीक चूर्ण कर सूँघनेसे कफज्वर मिटजाताहै तथा शिरका दर्द दूर होताहै॥ ४६॥

वातज्वरपर चूर्ण।

शिवाकट्वीत्रिकटुकं रुबुकं सकिरातकम्।
वातज्वरहरं चूर्णमुक्तं श्रेष्ठं भिषग्वरैः॥ ४७॥

हरीतकी, कुटकी, सोंठ, पीपल, मिर्च, लाल अरण्डकी जड़, चिरायता इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करे। यह चूर्ण गरम पानीके साथ ३मासा खानेसे वातज्वर मिटजाताहै। उत्तम वैद्योंने कहा है कि, यह उपाय अत्यन्त श्रेष्ठ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(रुबुकं–' रूविकं' ऐसा भी पाठ है । जिसका अर्थ 'करील-कीछाल ' कियाहै ।) ॥ ४७ ॥

आमज्वरपर अभ्यङ्ग ।

अभ्यज्य तिलतैलेन स्नानं तप्तोदकेन वा ।
करोति तस्य सन्नश्येदामोद्भूतो ज्वरो द्रुतम् ॥४८॥

तिलका तेल शरीरमें मलकर जो गरम पानीसे स्नान करताहै. उसका आमसे उत्पन्न हुआ ज्वर नाशको प्राप्त होताहै ॥ ४८ ॥

त्रिदोषज्वरपर चूर्ण ।

कट्वी कृष्णामृता शुंठी किराताम्भोदपर्पटैः ।
वातपित्तकफातंकं चूर्णमेषां विनाशयेत् ॥ ४९ ॥

कुटकी, पीपल, गिलोय, शोंठ, चिरायता, मोथा; पित्तपापड़ा इन औषधियोंको समान लेकर चूर्ण करे । ३ मासा खाय थोड़ासा गरम पानी पिये तो वात, पित्त, कफ इन दोषोंके ज्वर दूर होतेहैं ॥ ४९ ॥

शीतज्वरका उपाय ।

द्रोणपुष्प्यमृता शुंठी पिप्पलींपयसा पिबेत् ।
शीतज्वरं शमयति मात्रा टंकद्वयोन्मिता ॥५० ॥

द्रोणपुष्पी (गूमा), गिलोय, सोंठ, पीपल इन सबको बराबर दोदो मासा लेकर इकट्ठा पीसे । फिर दोटंक पानीमें उसको डालकर मिट्टीके पात्रमें गरम करके पीनेसे शीतज्वरका नाश होताहै ॥ ५० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्वरपर दीपन चूर्ण ।

शिवाग्निपिप्पलीपथ्यासैंधवानां विचूर्णितम् ।
दीपनं पाचनं रुच्यं ज्वरनुच्छ्लेष्मनुत्सदा ॥ ५१ ॥

आमला, चित्रक, पीपल, हरीतकी, सेंधा इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करे। गरम पानीके साथ इस चूर्णको फाँकनेसे जठराग्नि प्रदीप्त होतीहै, मलका पाचन होताहै, रुचि उत्पन्न होतीहै, ज्वर और कफका नाश होताहै । कितने एक वैद्य इसचूर्णको मिट्टीके वासनमें पानीके साथ गरम करके पीनेको कहतेहैं ॥ ५१ ॥

विषमज्वरका उपचार ।

मरिचेन समायुक्तस्तुलसीपत्रजो रसः ।
द्रोणपुष्पीरसो वापि विषमज्वरनाशनः ॥ ५२ ॥

तुलसीदलका रस दो तोला लेकर उसमें लगभग दो आनेभर मिर्चका चूर्ण मिलायकर पीनेसे विषमज्वरका नाश होजाताहै । अथवा गूमाके रसमें मिर्चका चूर्ण डालकर पीनेसे भी विषमज्वरका नाश होजाताहै ॥ ५२ ॥

शीतज्वरादिनाशक षट्तक्र तैल ।

हेमा मूर्वा नागरः स्वर्जिका रुग्-
दोषा लाक्षा कल्कसंयुक्तमेकम् ।
तैलं सिद्धं षड्गुणे तक्रभागे-
षट्तक्रं तच्छीततापार्त्तिहारि ॥ ५३ ॥

मजीठ, चुरणहार, मरोरफली सोंठ, सज्जीखार, कूट, हलदी, लाख इन सबको बराबर लेकर कल्क करे। (औषधियोंमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पानी डालकर उनको पीसके चटनीकी समान करनेको कल्क कहतेहैं ।) इस कल्कसै छःगुणा तेल उसमें डालना। तेलसै छः गुणा मट्ठा उसमें डाले । जबतक वह कल्क सिककर खरा होजाय तबतक उस तेलको चूल्हेपर चढ़ाकर पकावे । इस प्रकारसै सिद्ध हुआ तेल लेना योग्य है । इस तेलके चुपड़नेसै शीतज्वरकी पीड़ा मिटतीहै । इस तेलको षट्तक्र तेल कहते हैं ॥ ५३ ॥

सन्निपातादिपर आनन्दभैरववटी ।

सौभाग्यहिंगुलकणा गरलं मरीचं संमर्द्य निंबुकरसे
दिवसद्वयं च । आनन्दभैरववटी तुवरीप्रमाणा
नानानुपानवशतः सकलामयघ्नी ॥ ५४ ॥
सन्निपातज्वरे वातकफजे शैत्यमोहयोः ।
शूलेऽजीर्णो विशेषेण रसोयमतिपूजितः ॥ ५५ ॥

सुहागा, शिंगरफ, पीपल, बच्छनाग, मिर्च इन सबको नीबूके रसमें दो दिन तक घोटकर अड़हरके दानेकी समान गोली बनावे । इस गोलीको आनंदभैरववटी कहते हैं । यह गोली अलग २ अनुपानके साथ सर्व रोगोंका नाश करतीहै। सन्निपातज्वरमें, वायु तथा कफसे उत्पन्न हुए ज्वरमें, मोह वालेको तथा विशेषकरके शूलरोगमें और अजीर्णरोगमें यह आनन्दभैरव रस अत्यन्त बखाननेके योग्य गुण करताहै ५५॥

सन्निपातादिरोगोंपर चिन्तामणि रस ।

शुद्धं सूतं गंधकं च विषं मरिचमभ्रकम् ।
क्षारत्रयं जीरके द्वे व्योषं लवणपंचकम् ॥ ५६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागवल्लीरसेनाथ तथार्द्रकरसेन च ।
संमर्द्य बहुशः कार्या गुटिका चणकोन्मिता॥५७॥
चिंतामणिरसः ख्यातः सन्निपातज्वरापहः ।
कफामशूलदुर्नामविषमज्वरनाशनः ॥ ५८ ॥

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध बच्छनाग, मिर्च, अभ्रक, जवाखार, सज्जीखार, सुहागा, जीरा, कालाजीरा, सोंठ, पीपल, कचियानोंन, सेंधानोन, समुद्रनोन, विरियासंचरनोन, कालानोन इन सबको बराबर लेकर पानोंके साथ घोटै तथा आर्द्रकके रसमें घोटे, इस प्रकारसे बहुत दिनतक घोटकर चनेकी समान गोलियां बनावे। इस रसका नाम चिन्तामणि रस है, सन्निपातके ज्वरको यह दूर करता है। यह औषधि कफ, आमशूल, बवाशीर और विषमज्वरकोभी मिटाती है ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥

सन्निपातादिपर गुटिका ।

शुद्धं सूतं विषं गंधं व्योषं तुल्यं विनिक्षिपेत् ।
एकस्य त्रिगुणं धूर्तबीजं सर्वं विचूर्णयेत् ॥ ५९ ॥
भृंगराजरसेनैव गुटिकाः संप्रकल्पयेत् ।
गुंजोन्मिता सन्निपाते विषमे कफजे ज्वरे ॥ ६० ॥
शीतांगे च भ्रमोन्मादे मंदाग्न्यादौ प्रशस्यते॥६१॥

शुद्ध पारा, शुद्ध बच्छनाग, शुद्ध गन्धक, सौंफ, पीपल, मिर्च इन सबको बराबर (एक २तो०) ले, धतूरेके बीज तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोला ले, सबका बारीक चूर्ण करके भांगरेके रसमें डालकर चौंटलीकी समान गोली बनावे,इस एक गोलीके देनेसे सन्निपात विषमज्वर, कफज्वर, शीतांगवायु, भ्रम, उन्माद, आदि रोग मिटतेहैं। तथा मंदाग्नि आदि रोगोंमें यह गुटिका अत्यन्त गुण करतीहै ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥

सोपद्रवसन्निपातहरकाथ ।

भूनिम्बदारुदशमूलमहौषधाब्द-
तिक्तेन्द्रबीजघनिकेभकणाकषायः ।
तंद्राप्रलापकसनारुचिदाहमोहं--
श्वासादियुक्तमखिलं ज्वरमाशु हन्यात् ॥ ६२ ॥

चिरायता, देवदारु, बेल, सोनापाठा कम्भारी, पाढल अरणी, शालिवन, पिठवन, छोटीकटेरी, बड़ीकटेरी, गोखरू, शोंठ, मोथा, कुटकी, इन्द्रजौ, धनियां, गजपीपल, इन सबको बराबर ले, ४ तोलेका काथ १६ गुणा पानीमें करे जब अष्टमांश शेष रहै तब वो छानकर देवै । तंद्रा, प्रलाप, खाँसी, अरुचि, दाह, मोह, दमा, आदि उपद्रववाले सन्निपातज्वरका नाश होताहै ॥ ६२ ॥

सन्निपातादिपर अंजन ।

त्रिकटु त्रिफला हिंगु वचा कुष्ठं च सैंधवम् ।
कट्वी शिरीषजं बीजमजामूत्रेण पेषयत् ॥ ६३ ॥

---

१ मोहश्वासादि-'श्वासकासादि' ऐसा पाठ है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंजनं हन्त्यपस्मारं सन्निपातं सुदारुणम् ।
निशांध्यं तिमिरं भूतमुन्मादं चित्तविभ्रमम् ॥६४॥

सोंठ, पीपल, मिर्च, हर्र, बहेड़ा, आमला, हींग, बच, कूट, सेंधा, कुटकी, सरसोंके बीज, इन सबको बकरीके मूत्रमें पीसे फिर अंजन करे तो अत्यन्त भयंकर सन्निपातज्वर नाशको प्राप्त होताहै । मृगी रतोंधा, अंध, भूतविकार, उन्मादरोग, और चित्तभ्रम (हौलदिली) यह सब रोग मिटतेहैं ॥ ६३ ॥ ६४ ॥

विषमज्वरपर दंत्यादि चूर्ण ।

दंती शिवा शठी तिक्ता सैंधवं सकिरातकम् ।
पिप्पली पिप्पलीमूलं पौष्करं बृहतीद्वयम् ॥६५॥
छिन्नापटोलकौ मुस्ता वचा च समभागकम् ।
षोडशांगमिदं चूर्णं विषमज्वरनाशनम् ॥ ६६ ॥

दन्तीमूल, आमला, कचूर, कुटकी, सेंधा, चिरायता, पीपल, पीपलामूल, पुष्करमूल, कटेरी, छोटी कटेरी, गिलोय, परवलकी जड़, परवलके पत्ते, मोथा, वच, इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करे । सोलह औषधियोंसे बननेके कारण इसको षोड़शाङ्ग कहतेहैं । इस चूर्णसे विषमज्वरका नाश होजाताहै । तीन मासा इस चूर्णको खिलाकर उपरसे थोड़ा पानी पिलावे ॥ ६५ ॥ ६६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातज्वरपर सौवर्चलादि चूर्ण ।

मरिचं नागरं चूर्णं वातज्वरविनाशनम् ॥ ६७ ॥

सौवर्चल नमक, चिरायता, कुटकी, पीपल, हरीतकी, मिर्च, सोंठ इन सबको बराबर लेकर बारीक चूर्ण करे। पानीके साथ यह चूर्ण तीन मासा खानेसे वातज्वरका नाश होताहै ॥ ६७ ॥

त्रिदोषपर किरातादि क्वाथ ।

किराताब्दामृताकट्वीशुंठीक्वाथस्त्रिदोषजे ॥ ६८ ॥

चिरायता, मोथा, गिलोय, कुटकी, सोंठ इन औषधियों-को बराबर ले तिसका क्वाथ करके पिये तो त्रिदोषसे उत्पन्न हुआ ज्वर मिटताहै ॥ ६८ ॥

सन्निपातपर आकारकरभादि गुटिका ।

आकारकरभं कृष्णा लवंगं कुंकुमं समम् ।
आर्द्रकस्य रसेन स्यात् गुटिका टंकसम्मिता६९॥
सन्निपातं कफं तंद्रां कासश्वासौ व्यपोहति ॥७०॥

अकरकरा, पीपल, लौंग, केशर, रन सबको बराबर ले आर्द्रकके रसमें घोटकर चार २ मासेकी गोली बनावै। एक गोलीके खानेसे सन्निपात, कफ, तंद्रा, खाँसी और दमा यह सब रोग दूर होतेहैं ॥ ६९ ॥ ७० ॥

सर्वज्वरपर तिक्तादि क्वाथ ।

तिक्तोशीरबलाधान्यपर्पटांभोधरैःकृतः ।
क्वाथः पुनर्नवायुक्तो ज्वरं शीघ्रं विनाशयेत् ॥७१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुटकी, खश, बारियारीकी जड़, धनियां, पितपापड़ा, मोथा, पुनर्नवा (सांठ) इन सबका क्काथ पीनेसे सर्व प्रकारके ज्वर मिटतेहैं ॥ ७१ ॥

इति ज्वरप्रतीकारः ।

अथातीसारग्रहणीप्रतीकारः ।

अतिसारपर लीलावती वटिका ।

दाडिमानां च मुकुलं बब्बूलकुसुमं तथा ।
आम्रास्थिवंशी मरिचं महाराष्ट्री च धातुकी॥७२॥
माजूफलं मात्रिका च लोध्रं मोचरसं तथा ।
जातीफलं च कुटजं मस्तकी समभागिका ॥७३॥
भागद्वयं च खदिरं मज्जा कूष्माण्डबीजजा ।
चतुर्भागं विचूर्ण्येदं मर्दयेत् खाखसांभसा ॥ ७४ ॥
टंकोन्मिता वटी देया तंदुलांभोयुता च वै ।
एषा लीलावती ख्याता महातीसारनाशिनी॥७५॥

दाडिमकी कली,बबूलके फूल,आंबकी गुठली, वंशलोचन, मिर्च, फटकरी, आमलेके फूल, माजूफल, विसोंटा, लोध, मोचरस, जायफल, इन्द्रजौ, रूमी मस्तंगी इन सबको एक २ तोला ले । सफेद पेठेके बीचकी मींगें ४ तो० लेनी । फिर इन सबका चूर्ण करके खस २ या पोस्तके क्काथमें घोटना चाहिये । चार २ मासेकी गोलियां करे । यह एक गोली चाव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोंके धोवनके साथ रोगीको देवे । यह लीलावती नामक गोली अत्यन्त भारी अतिसारका नाश करनेवाली है ॥७२॥७५॥

पुराने अतीसारपर महागंगाधर चूर्ण ।

धातक्यामलकीपयोधरवृकीकङ्गयष्टीमधु-
श्रीजंब्वाम्रफलास्थिनागरविषाह्वीबेरलोध्रेंद्रजैः ॥
तुल्यांशं विहितं सतंडुलजलं गंगाधराख्यं महत्
चूर्णं तूर्णमपाकरोति सकलं जीर्णातिसारं परम्७६॥

धायफूल, आमला, मोथा, पाढ़, कुटकी, मुलहठी, बेलका मुरब्बा, जामुनके फलकी गुठलीकी मींग, आमकी गुठली; सोंठ, अतीसकी कली, नेत्रवाला, लोध, जौ, इन सबको बराबर ले बारीक चूर्ण करे। इसका नाम महागंगाधर चूर्ण है। यह चूर्ण पानीके साथ तीन मासाभर फांकनेसे सब प्रकारके पुराने अतीसार शीघ्रतासे जातेरहतेहैं ॥ ७६ ॥

अतिसारपर शुण्ठ्यादि चूर्ण ।

शुंठीमदाकुसुममोचरसाजमोदा-
स्तक्रान्विताः प्रशमयन्त्यतिसारमुग्रम् ॥ ७७ ॥

सोंठ, धायफूल, मोचरस और अजमोद इन सबको बराबर ले बारीक चूर्ण करके मट्ठेके साथ इस चूर्णको ३मासा खानेसे महाभयंकर अतिसारका नाश होताहै ॥ ७७ ॥

अतिसारपर जातीफलादि लेप ।

जातीफलाम्रबीजाहिफेनबिल्वप्रलेपनम् ।
नाभौ तक्रेण तच्छीघ्रमतिसारं निवारयेत् ॥ ७८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायफल,आमकी गुठली,अफीम और बेल इन सबका चूर्ण कर छाछमें मिलाय नाभिपर लेप करनेसे अतिसारका रोग जल्दीसे दूर होताहै ॥ ७८ ॥

ज्वरातिसारपर नागरादि क्वाथ ।

नागरातिविषामुस्ताभूनिम्बामृतवत्सकैः ।
सर्वज्वरहरःक्वाथः सर्वातीसारनाशनः ॥ ७९ ॥

सोंठ, अतीस, मोथा, चिरायता, गिलोय और कुटकी इन औषधियोंको बराबर लेकर तिसका क्वाथ करके पीनेसे सर्व प्रकारके ज्वर तथा सर्व प्रकारके अतिसारका नाश होताहै ॥ ७९ ॥

रक्तातिसारपर ह्रीबेरादि क्वाथ ।

ह्रीबेरातिविषामुस्ताबिल्वधान्यकनागरैः ।
पिबेत् कोष्ठविबंधघ्नं शूलदोषामपाचनम् ।
सरक्तं हन्त्यतीसारं सज्वरं वातविज्वरम् ॥ ८० ॥

नेत्रवाला, अतीसकी कली; मोथा, बेल, धनियां, सोंठ इन सबको बराबर ले क्वाथ करके पिये । इससे बद्धकोष्ठ जाता रहेगा, पेटका दर्द दूर होगा, आमका पाचन होगा। अतिसारमें लोहू गिरता होगा वो बंद होगा । तथा ज्वर सहित और विना ज्वरका अतिसार मिटजायगा ॥ ८० ॥

समस्त अतिसारपर बिल्वादिगुटिका ।

बिल्वं मोचरसं चेंद्रयवं लोध्रं च धातकी ।
सगुडा गुटिका कार्या सर्वातीसारनाशिनी ॥ ८१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेल, मोचरस, इन्द्रजौ, लोध, धायफूल, इन सबको बराबर ले तिसमें गुड डाले। तीन २ मासेकी गोली बनावै, एक गोली रोज ठंढे पानीके साथ खानेसे अनेक भांतिके अतिसार मिटतेहैं ॥ ८१ ॥

आमातिसारपर हिंग्वादि चूर्ण।

हिंगु सौवर्चलं व्योषमभयातिविषा वचा।
तप्तोदकेन संपेयमामातीसारनाशनम् ॥ ८२ ॥

हींग, सौवर्चल, नमक, सोंठ, मिर्च, पीपल, हरीतकी, अतीस, वच इन ओषधियोंको बराबर लेकर चूर्ण करे। तीन मासा चूर्ण गरम पानीके साथ पीनेसे आमातिसारका नाश होताहै ॥ ८२ ॥

शूलादिपर धान्यादि क्काथ।

धान्यं बिल्वं नागरं च बालकं मुस्तकं तथा।
क्काथोऽयं पाचनः शूलविबंधामाग्निमांद्यजित् ॥ ८३ ॥

धनियां, बेल, शोंठ, नेत्रवाला, मोथा इनको बराबर ले क्काथ करके पीनीसे मलका पाचन होताहै। शूल और कोष्ठबद्ध मिटताहै, आमका पाचन होताहै, मन्द जठराग्नि प्रदीप्त होताहै ॥ ८३ ॥

संग्रहणीपर पुनर्नवादि चूर्ण।

पुनर्नवामृताशुंठीमुस्ताचूर्णं पिबेन्नरः।
तप्तोदकेन सहितं ग्रहण्यरुचिनाशनम् ॥ ८४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साँठी, गिलोय, सोंठ और मोथा इन औषधियोंको समान भाग लेकर चूर्ण करके तीन मासा खाय, ऊपरसे थोड़ासा गरम पानी पिये। इससे संग्रहणी दूर होतीहै ॥ ८४॥

संग्रहणीपर पाठादिक्काथ।

पाठाब्दलज्जालोध्रं च कुटजामृतधान्यकम्।
बालकं धातकी विश्वं बिल्वमेषां कषायकः ॥
ग्रहणीमतिसारं च नाशयेदामपाचनः ॥ ८५ ॥

पाढ़, मोथ, लज्जालू, लोध्र, इन्द्रजौ, गिलोय, धनियां, सुगन्धवाला धाय, फूल, सोंठ, बेल, इन सबको बराबर ले क्काथ करके पीनेसे संग्रहणी व अतिसारका नाश होताहै और आमका पाचन होजाताहै ॥ ८५ ॥

इति अतिसारसंग्रहणीरोगप्रतीकारः ।

अथार्शोरोगप्रतीकारः ।

अर्शपर मरिचादि मोदक कहतेहैं ।

मरिचमहौषधचित्रकसूरणभागा यथोत्तरा द्विगुणाः ।
सर्वसमो गुडभागः प्रोक्तोयं मोदकः प्रसिद्धफलः॥८६॥
ज्वलनं ज्वलयति जठरमुन्मूलयतीह शूलगुल्मगदान् ।
निःशेषयतिश्लीपदमर्शांसि च नाशयत्याशु ॥ ८७॥

मिर्च, सोंठ, चित्रक, जमीकन्द, सबको क्रम २ से दूना ले। यानी मिर्च एक तोला, सोंठ दो तोला, चित्रक ४ तोला,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमीकन्द ८ तो० । इन सबके बराबर अर्थात् १५ तो० गुड़ लेना चाहिये । मिर्च आदि औषधियोंका चूर्ण करके तिसके लड्डूगुड़में बनावे । फिर वह मोदक अपनी जठराग्निके बलानुसार खानेसे जठराग्नि प्रदीप्त होतीहै । यह औषधि जठररोगको जड़से उड़ादेतीहै । शूल व गुल्मरोगको मिटादेतीहै । श्लीपदको बिलकुल दूर करतीहै, बवासीरका शीघ्रतासे नाश करती है । यह सर्वत्र प्रसिद्ध मोदक अत्यन्त गुण करते हैं ॥ ८६ ॥ ८७ ॥

अर्शपर सैंधवादि चूर्ण ।

सैन्धवेन्द्रयवौ शुंठी बिल्वारलुकचित्रकम् ।
चूर्णं तक्रेण पातव्यमर्शसां नाशनं परम् ॥ ८८ ॥

सेंधा, इन्द्रजौ, सोंठ, बेल, बड़े अडूसेकी छाल, चित्रक इन सबका चूर्ण छांछके साथ छःमासा पीनेसे बवासीर दूर होतीहै ॥ ८८ ॥

अर्शपर सूरणादि चूर्ण ।

सूरणश्च वचा शुंठी मुशली कुटजः समम् ।
चूर्णं तक्रेण पातव्यमर्शसां नाशनं परम् ॥ ८९ ॥

जिमीकन्द, बच, सोंठ, सफेद मूसली, इन्द्रजौ, इन सबको बराबर ले बारीक चूर्ण करके छांछके साथ ३ मासे खाय । अर्शका नाश करनेके लिये यह उत्तम उपाय है ॥ ८९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्शादिपर लवणादि चूर्ण ।

लवणत्रितयं शुंठी पथ्याक्षारौ यवानिका ।
कृष्णा हिंगु विडंगंच चूर्णं सर्पिस्समन्वितम् ॥
गुल्मशूलविसूचिघ्नमर्शोजीर्णविनाशनम् ॥ ९० ॥

सेंधा, संचल, विड़ सोंठ, हरड, जवाखार, सज्जीखार, अजवायन, पीपल, हींग, वायविड़ंग इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करे, घीमें मिलाकर तीन मासा खाय तो गोला, शूल, विसूचिका, बवाशीर और अजीर्णका नाश होजाताहै॥९०॥

इत्यर्शसां प्रतीकारः ।

अथ भगंदरप्रतीकारः ।

भगंदरपर निशादि लेप ।

निशामलकदंतीनां लेपः कार्यो भगन्दरे ॥ ९१ ॥

हलदी, आमला और दन्तीकी जड़, इन तीनोंको पानीमें पीसकर भगंदरपर लेप करना चाहिये ॥ ९१ ॥

भगंदरपर त्रिफलादि लेप ।

त्रैफलेन रसेनापि विडालास्थिप्रलेपनम् ॥ ९२ ॥

हरड, बहेड़ा, आमला, इन सबको बराबर पानीमें मले, मलकर उन्हें पानीमें घोल दे, फिर उस पानीको नितार लेवे । इस पानीमें बिल्लीकी हड्डीको पीसकर तिसका लेप करे तो भगंदर नाश होवे ॥ ९२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगंदरपर जातीपत्रादि लेप ।

जातीपत्रामृताशुंठी सैंधवं वटपल्लवाः ।
हरिद्रासहितो लेपो भगंदरहरः परः ॥ ९३ ॥

चमेलीके पत्ते, गिलोय, सोंठ, सेंधा, वड़के कोमल पत्ते, हलदी इन सबको पानीमें पीसकर लेप करे तो भगंदर मिटताहै ॥ ९३ ॥

भगंदपर मरीचादि चूर्ण ।

कर्षैकं मरिचं सार्द्धं रसकर्पूरसंज्ञकम् ।
त्रिंशद्दिनैर्नाशयति पायसाशी भगंदरम् ॥
उपदंशी वातरक्ती सर्वथा स सुखी भवेत् ॥ ९४ ॥

एक तोला मिर्चं तथा १॥ तो० रसकपूर ले । दोनोंको एकत्र घोट बारीक चूर्ण करे । प्रतिदिन इस चूर्णको ५ रत्ती खाय, ऊपरसे गायका दूध पिये । इस प्रकार ३० दिनतक पीनेसे भगंदरका नाश होताहै । उपदंश तथा वारतक्तका नाश होकर रोगी सर्व प्रकारसे सुखी होताहै ॥ ९४ ॥

इति भगंदररोगप्रतीकारः ॥

अथ उदररोगप्रतीकारः ।

उदररोगपर एलकादि चूर्ण ।

एलकं देवपुष्पं च टंकणं समभागकम् ।
त्रिभिः समं सोरकं च टंकैकमुदरे हितम् ॥ ९५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एलुआ, लवंग, सुहागा इन तीनोंको बराबर ले । इन तीनोंकी बराबर कलमी सोरा लेना चाहिये । इन सबका बारीक चूर्ण करके पानीके साथ ४ मासा दे । यह चूर्ण उदररोगमें हितकारक है ॥ ९५ ॥

उदर रोगपर विरेचन ।

पिष्टं तण्डुलजं टंकत्रयं स्नुग्दुग्धमिश्रितम् ।
तदपूपं घृते पक्कं प्रातः खादेत्कवोष्णकम् ।
विरेकेनोदरं सर्वं नाशमायाति निश्चितम् ॥ ९६ ॥

चावलका आटा बारहमासा लेकर तिसको सेंढ़के दूधमें मिलाय टिकिया करे । फिर उसको घीमें तलै, सबेरेही गरम २ खालेनेसे सर्व उदर व्याधियोंका नाश होजाताहै । यह निश्चयहै ॥ ९६ ॥

उदररोगपर शरफोंकेका प्रयोग ।

शरपुंखाभवं मूलं तक्रेणोदरनाशनम् ॥ ९६ ॥

शरफोंकाके मूलकी छाल तीन मासा लेकर बारीक चूर्ण करके छाँछके साथ पीनेसे उदररोग मिटजाताहै ॥ ९७ ॥

इत्युदररोगप्रतीकारः ॥

अथ शोफरोगप्रतीकारः ।

सूजनपर लेप ।

कटु सौभांजनं शुंठी वर्षाभूसुरदारु च ।
कांजिकेन कृतो लेपः शोफपीडानिवारणः ॥९८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुटकी, सैंजनेंकी छाल, शोंठ, सांठ, देवदारु, इन सबको बराबर ले कांजीमें पीसकर लेप करनेसे सूजनकी पीड़ा दूर होतीहै ॥ ९८ ॥

सूजनपर कृष्णादि चूर्ण ।

कृष्णाग्निविश्वघनजीरककण्टकारी–
पाठानिशाकरिकणामगधाजटानाम् ।
चूर्णं कवोष्णसलिलैरवलोड्य पीतं
नातःपरं श्वयथुरोगहरं नराणाम् ॥ ९९ ॥
कासश्वासामवाताग्निमांद्यरुक्प्लीहनाशनम् १००

पीपल, चित्रक, शोंठ, मोथ, जीरा, छोटी कटेरी, पाढ़, हलदी, गजपीपल, पीपलामूल इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करे। ४ मासा इस चूर्णको लेकर गरम पानीमें डाल, कर घोलै, फिर पीजाय। मनुष्योंके सूजन रोगको मिटानेके लिये इसकी समान दूसरा उत्तम उपाय नहीं है। इस चूर्णको पीनेसे खाँसी, दमा, आम वायु, अग्निमांद्य, पेटका दूखना और पिल्ली इन सबका नाश होताहै ॥ ९९ ॥ १०० ॥

इति शोफरोगप्रतीकारः ।

अथामवातप्रतीकारः ।

आमवातपर उष्ट्रीदूध ।

उष्ट्रीदुग्धं यथा पथ्यमामवाते तथोदरे ।
निरन्नस्य तथा नान्यद्भेषजं पृथिवीतले ॥ १०१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊंटनीका दूध पीना, तथा अन्न बिल्कुल न खाना; यह उपाय आमवातवालेको तथा उदररोगवालेको जैसा हितकारक है, वैसा कोई दूसरा उपाय पृथ्वीमें नहीं है ॥ १०१ ॥

आमवात तथा शोफोदरका उपाय।

शुंठी विडंगं सुरदारु पथ्याकवोष्णकेनाममरुद्रदघ्नम्।
दार्वीन्द्रबीजंमरिचंविडंगघुणप्रियैरंडजटात्रिवृच्च १०२
मूलं पुनर्नवायाश्च निशायुग्मामृतासमम्।
शोफोदरहरः क्वाथो मूत्रगुग्गुलसंयुतः ॥ १०३ ॥

शोंठ, वायविडंग, देवदारु, हरीतकी इन सबका चूर्ण करके बराबर गरम पानीके साथ तीन मासा देनेसे आमवायुका रोग मिटताहै तैसेही दारुहलदी, इन्द्रजौ, मिर्च, वायविडंग, अतीसकी कली, लाल अंडकी जड़, निसोत, साँठकी जड, हलदी, अमिया हलदी, गिलोय इन सबका क्वाथ करके तिसमें गायका मूत्र तथा गूगल डालकर पीनेसे शोफोदर दूर होताहै ॥ १०२ ॥ १०३ ॥

इत्यामवातप्रतीकारः।

अथ कृमिरोगप्रतीकारः।

कृमिरोगपर चूर्ण।

तप्तोदकेन संपीतं विडंगं त्रिवृता वरा।
कृमिघ्नमुक्तमथवा त्रिटूकटु त्रिफला त्रिवृत्॥ १०४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायविडंग, निसोथ, हर्र, बहेड़ा, आमला, ४ मासाभर इन सबका चूर्ण गरम पानीके साथ पीनेसे कृमिनाश होताहै। अथवा,– शोंठ, पीपल, मिर्च, हर्र, बहेड़ा, आमला, निसोथ इनका चूर्ण गरम पानीके साथ ४ मासा पीनेसे कीड़ोंका नाश होताहै ॥ १०४ ॥

कृमिरोगपर वचादि चूर्ण ।

वचा विडंगं कुटजं नवत्वक् खदिरं समम् ।
अजामूत्रेण सप्ताहादुदरक्रिमिनाशनम् ॥ १०५ ॥

वच, वायविडंग, इन्द्रजौ, नवीन तज, कत्था इन सबको बराबर ले बारीक चूर्ण करके बकरीके मूत्रके साथ प्रतिदिन चार मासा ले ७ दिनतक खाय तो पेटके कृमि नाशको प्राप्त होतेहैं ॥ १०५ ॥

इति कृमिरोगप्रतीकारः ।

अथ गुल्ममन्दाग्निशूलचिकित्सा ।

गुल्मरोगपर शुंठचादि चूर्ण ।

शुंठी पुष्करमूलं च हिंगुसौवर्चलान्वितम् ।
तप्तोदकेन संपीतं गुल्माध्मानरुजापहम् ॥ १०६ ॥

शोंठ, पुष्करमूल, हींग, सौवर्चल इन चार औषधियोंका चूर्ण करके ४ मासा चूर्ण गरम पानीके साथ पीनेसे गोला तथा अफारेकी पीड़ा दूर होतीहै ॥ १०६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदाग्निपर त्रिकट्वादिचूर्ण ।

त्रिकटुकमजमोदा सैंधवं जीरके द्वे
समधरणधृतानामष्टमो हिंगुभागः ।
प्रथमकवलभुक्तं सर्पिषा चूर्णमेत-
ज्जनयति जठराग्निं वातरोगान्निहन्ति ॥ १०७ ॥

शोंठ, पीपल, मिर्च, अजवायन, सेंधा, जीरा, कालाजीरा इन सबको बराबर (चार २ मासा) लेवै । हींग आठवां भाग अर्थात् आधा तोला लेना । इन सबका चूर्ण करके उसमेंसे दो मासाभर चूर्ण घीमें मिलाय भोजनके समय पहले ग्रासके साथ खाना चाहिये । इसके खानेसे जठराग्नि प्रदीप्त होतीहै, तथा वायुका रोग नाशको प्राप्त होताहै ॥ १०७ ॥

शूलपर शुंठ्यादि चूर्ण ।

शुंठी हरीतकी कृष्णा त्रिवृत्सौवर्चलं समम् ।
तप्तोदकेन संपीतं चूर्णं शूलहरं परम् ॥ १०८ ॥

शोंठ, हरीतकी, पीपल, निसोथ, सौवर्चल इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करे । इस चूर्णको गरम पानीके साथ ४ मासाभर खानेसे पेटका दर्द (शूल) मिटताहै ॥ १०८ ॥

शूलपर तुम्बुरु आदि चूर्ण ।

तुंबुरुः पौष्करं हिंगु यवसारो यवानिका ।
लवणत्रितयं पथ्या विडंगं समभागकम् ॥ १०९ ॥
त्रिवृत्त्रिभागं तच्चूर्णमुष्णनीरेण यः पिबेत् ।
गुल्माध्मानामवातांश्चशूलमाशु व्यपोहति ११०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनियाँ, पुष्करमूल, हींग, जवाखार, अजवायन, सैंधा, सौवर्चल, विड़, हर्र, वायविडंग इन सबको बराबर (एक २ तो०) ले। निसोथ तीन भाग (३ तो०) लेना चाहिये। इन सबका बारीक चूर्ण करके गरम पानीके साथ ४ मासा चूर्ण जो मनुष्य पीताहै उसका गुल्मरोग, अफारा, आमवात और शूल यह रोग तत्काल दूर होतेहैं ॥ १०९ ॥ ११० ॥

शूलपर त्रिकट्वादि चूर्ण।

त्रिकटुस्वर्जिकाचूर्णं शूलघ्नं कोष्णनीरयुक्॥१११॥

शोंठ, मिर्च, पीपल, सज्जीखार इन चारोंका बारीक चूर्ण करके गरम पानीके साथ ४ मासा खानेसे शूलरोग दूर होताहै ॥ १११ ॥

इति गुल्ममन्दाग्निशूलप्रतीकारः ।

अथ पाण्डुकामलारोगचिकित्सा ।

पांडुकामलापर त्रिफलादि क्काथ।

त्रिफलाकटुकानिंबकिराताम्मृतशारिवाः ।
क्काथो मधुयुतः पांडुकामलारोगनाशनः ॥ ११२॥

हर्र, बहेड़ा, आमला, कुटकी, नीमकी छाल, चिरायता, गिलोय, अनन्तमूल इन सबको बराबर ले;इसके ४ तोलेका क्काथ सोलह गुणा पानीमें करके तिसमें शहत मिलावे, इसके पीनेसे पाण्डुरोग तथा कामला दूर होताहै । (वात,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पित्त या कफकी व्याधि होय तो क्रमानुसार क्राथसे सोलहवाँ, आठवाँ या चौथा भाग शहत डालना चाहिये) ॥ ११२ ॥

पाण्डुकामलापर निशादि चूर्ण ।

निशामलकचूर्णं तु कटुत्रयसमन्वितम् ।
सर्पिर्मधुभ्यां संलीढं कामलापांडुनाशनम्॥११३॥

हलदी, आमला, सोंठ,पीपल, मिर्च इन सबको बराबर ले चूर्ण कर घी तथा शहतके साथ तीन मासा खानेसे कामला तथा पाण्डुरोगका नाश होताहै । घी तथा शहत बराबर न लेकर कम ज्यादा लेना ॥ ११३ ॥

पाण्डु तथा कामलापर दूसरा उपाय ।

द्विनिशा त्रिफला तिक्ता लोहचूर्णं ततोधिकम् ।
शिवागैरिकरात्रीणामंजनं कामलापहम् ॥ ११४ ॥

हलदी, दारुहलदी, हर्र, बहेड़ा, आमला, कुटकी, लोह-भस्म इन सबको बराबर ले चूर्ण करके घी तथा शहतमें ३ मासा खाय वो पाण्डु तथा कामला जाय । हर्र, गेरू और हलदी इन तीनोंका अंजन करनेसे कामला नष्ट होताहै ॥ ११४ ॥

कामलेपर नस्य ।

देवदालीफलं पिष्ट्वा पोटल्यास्तनुवाससा ।
उत्सिक्तेन मुहुर्नासास्रावान्नश्यंति कामलाः॥११५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंदालके फल पीसकर महीन वस्त्रमें रख उसकी पोटली बनावे। तिस पोटलीसे नाकमें रसकी बूंदें बारम्बार डालनेसे नाकसे पित्त बह जायगा, कामला नाशको प्राप्त होगा। (बंदालके गीले फल ले, गीले न मिलें तो सूखे लेवै।)११५

इति पाण्डुकामलारोगचिकित्सा।

अथ क्षयहिक्काच्छर्दिश्वासकासचिकित्सा।

क्षयपर चूर्ण और गुटिका।

अश्वगन्धा कणा शुण्ठी लवंगं समितोपलम्।
चूर्णं क्षयघ्नं गुटिका लवंगार्कप्रसूनजा ॥ ११६ ॥

असगंध, पीपल, सोंठ, लवंग, मिश्री इन सबको बराबर ले चूर्ण करे (२ मासाभर शहतके साथ) प्रत्येक दिन खानेसे क्षयरोग मिटताहै ॥ लौंग तथा आकके फूलकी कली मिलाकर पीसनेपर (४ रत्तीकी) गोली बनावे। (छायामें सुखावे) प्रतिदिन एक गोली खाय। इस प्रकार (११ दिन) खानेसे क्षयरोग मिटताहै ॥ ११६ ॥

क्षयरोगपर दूसरा चूर्ण।

त्रिकटु त्रिफला मुस्ता विडंगं सुरदारु च।
चातुर्जातं लवंगं च पद्मबीजं कणा जटा।
सरास्नाचूर्णमेतेषां द्विःसितं क्षयनाशनम् ॥ ११७॥

शोंठ, पीपल, मिर्च, हरीतकी, बहेड़ा, आमला, मोथा, वायविडंग, देवदारु, तज, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर, लौंग, कमलके बीज, पीपलामूल, रासना इन सबका चूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करे । जितना समस्त चूर्ण हो उससे दूनी खांड़ मिलावे । दो मासा चूर्ण शहतके साथ खानेसे क्षयरोगका नाश होताहै ॥ ११७ ॥

हिचकीका उपाय ।

मक्षिकाविड्युतो लाक्षारसो हिक्कानिवर्तनः ।
नावनादथ धूमेन शिवारात्रिभवेन च ॥ ११८ ॥

मक्खियोंकी बीट और लाखका रस एकत्र करके पिलानेसे हिचकी बन्द होती है । अथवा हरीतकी और हलदीका चूर्ण करके सूँघनेसे अथवा उसको चिलम या चुरटमें रखकर पीनेसे भी हिचकी बन्द होतीहै ॥ ११८ ॥

हिचकीका दूसरा उपाय ।

लवंगं मरिचं बिल्वं सितामधुयुतं लिहेत् ।
हिक्कार्तोवथवा नस्यं देयं सैन्धवनीरजम् ॥ ११९ ॥

लौंग, मिर्च, बेल इन तीनोंको बराबर ले चूर्ण करके शहत या शक्करके साथ खाने और चाटनेसे हिचकी दूर होतीहै । अथवा पानीमें सैंधव मिलाय तिसका नास लेनेसे भी हिचकी मिटतीहै ॥ ११९ ॥

वमनका उपाय ।

एलालवंगगजकेसरकोलमज्जा-
लाजाप्रियंगुघनचन्दनपिप्पलीनाम् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूर्णानि माक्षिकसितासहितानि लीढ्वा-
छर्दिं जयन्ति कफमारुतपित्तजाताम् ॥ १२० ॥

इलायची, लौंग, नागकेशर, बेरकी गुठलीकी मींग, धानकी खीलें, प्रियंगुफल, मोथा, चंदन, पीपल इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करे। तीन मासा चूर्ण शहत वा शक्करके साथ चाटने या खानेसे वात, पित्त, कफसे उत्पन्न सर्व प्रकारका वमन दूर होताहै । (यह उपाय अजमाया हुआ है) ॥ १२० ॥

वमनका दूसरा उपाय ।

लाजालवंगमेला च पद्मबीजं सुचूर्णितम् ।
सितामधुयुतो लेहश्छर्दिरोगहरः परः ॥ १२१ ॥

खीलें, लौंग, इलायची, कमलके बीज इनका बहुत अच्छा बारीक चूर्ण करके ३ मासा शहत या खांड़के साथ चाटने व खानेसे वमनका रोग मिटताहै ॥ १२१ ॥

दमा और खाँसीका उपाय ।

कर्कटाह्वा त्रिकटुकं शठी पद्मं च पौष्करम् ।
तप्तोदकेन संपीतं श्वासकासनिवारणम् ॥ १२२ ॥

काकड़ासिंगी, सोंठ, पीपल, मिर्च, कचूर, कमल, पुष्करमूल इन सबको बराबर ले महीन चूर्णकर ३ मासाभर गरम पानीके साथ पीनेसे दमा और खाँसी मिटतीहै ॥ १२२ ॥

खाँसीका उपाय ।

सवासाबृहती शुंठी पौष्करं सकुलत्थकम् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भार्ङ्गी कर्कटशृंगी च कणा शठी बिभीतकम् ।
कन्यारसेन गुटिका मुखस्था कासनाशिनी ॥ १२३॥

अडूसा, कटेरी, शोंठ, पुष्करमूल, कुलथी, भारंगी, काकडासिंगी, पीपल, कचूर, बहेड़ा इन सबको बारीक पीसकर इनकी गोली घीकुंआरके रसमें बाँधै । (४ रत्तीकी गोली वनावे ।) मुखमें रखकर गोलीका रस चूसे तो खाँसी मिटतीहै ॥ १२३॥

खाँसीका दूसरा उपाय ।

वासाशुंठीकणाचूर्णं मधुना कासनाशनम् ।
सवचा सकणा शुंठी वासा तद्वत्क्वोष्णकैः ॥ १२४॥

अडूसा, शोंठ और पीपलका चूर्ण करके शहतके साथ डेढ मासाभर खाय तो खांसी मिटतीहै । वैसेही बच, पीपल, शोंठ और अडूसेका चूर्ण करके गरम पानीके साथ पीनेसे भी खांसी मिटतीहै ॥ १२४ ॥

खांसीपर शुंठ्यादि चूर्ण ।

शुंठीवासाकणाचव्यव्याघ्रीचूर्णं ततोऽधिकम् ॥ १२५॥

शोंठ, अडूसा, पीपल, चव्य, छोटी कटेरी इन औषधियोंका चूर्ण करके गरम पानीके साथ पीनेसे खांसी मिटतीहै ॥ १२५ ॥

खांसीपर अमृतादि वटी ।

अमृतावराटिमरिचैर्द्विपञ्चनवभागयोजितैर्गुटिका ।
मरिचसमार्द्रकरसजा वातकफाध्मानकासघ्नी ॥ १२६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिलोय, कौड़ीका भस्म, मिर्च इन औषधियोंको क्रमानुसार दो, पांच तथा नव भाग ले। यानी गिलोय दो मासा, कौड़ीका भस्म पांच मासा और मिर्च नव मासा लेकर बारीक चूर्ण करे। तिनकी गोली मिर्चबराबर अदरकके रसमें डाले। प्रतिदिन सांझ सबेरे एक गोली खानेसे वायु, कफ, अफारा तथा खांसीका रोग मिटताहै ॥ १२६ ॥

अथाग्निमांद्यविसूचिचिकित्सा।

अग्निदीपन गुटिका।

त्रिकटुत्रिफलाहिंगुवरादीप्यगुडोऽग्निकृत् ॥ १२७॥

सोंठ, पीपल, मिर्च, हर्र, बहेड़ा, आमला, हींग, बायबिड़ंग, अजवायन इन सबको बराबर ले चूर्ण करके सबकी बराबर गुड़ मिलाय: चार २ मासेकी गोली बनावे। एक गोलीको खाय थोड़ा पानी पीनेसे जठराग्नि प्रदीप्त होतीहै ॥ १२७।

अग्निदीपन चूर्ण।

त्रिकटुत्रिफला वह्निर्दीप्यं हिंगुत्रिवृद्धरम्।
सौवर्चलं विडंगं च क्षारौ जीरौ लवंगकम् ॥ १२८ ॥
पुटैर्निम्बरसैर्भूयश्चूर्णितो वह्निदीपनः।
मंदाग्निगजसिंहोयं चूर्णो लोकेषु विश्रुतः ॥ १२९ ॥

सोंठ, मिर्च, पीपल, हर्र, बहेडा, आमला; चित्रक, अजमोद, हींग, निसोत, सेंधा, संचल, बायबिड़ंग, जवाखार, सज्जीखार, सफेद जीरा, स्याहजीरा, लौंग इन सब औषधियोंको बराबर ले बारीक चूर्ण करना चाहिये। इस चूर्णको कागदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नींबूके रसमें तीन भावना देवे । तीन माशा यह चूर्ण खानेसे जठराग्निको प्रदीप्त करताहै । मंदाग्निरूपी हस्तीके मारनेको सिंहके समान यह चूर्ण जगत्में प्रसिद्ध है ॥ १२८॥१२९ ॥

विसूचिका चिकित्सा ।

कारयेन्मर्दनं तैलैर्विसूच्यां भेषजं मतम् ॥ १३० ॥

मरिचादि तैल अथवा काले तिलका तेल अथवा सरसोंका तेल शरीरमें चुपडनेसे विसूचिका रोग दूर होताहै ॥ १३० ॥

विसूचिकापर चुक्रादि तेल ।

पलं चुक्रं कुष्ठं पिचुयुगमितं सैंधवकणा
तदर्धं प्रत्येकं करतलमितं जातिफलकम् ।
कटोस्तैलं पक्कं कुडवमितमग्नावधिधृत-
न्तदेतच्चुक्राद्यं शमयति विसूचिञ्च सगदाम् ॥१३१॥

चार तोला चूका, २ तो० कूट, सेंधा १तो०, पीपल१तोले, जायफल १ तोले, और सरसोंका तेल १६ तोले ले । सरसोंके तेलमें उपरोक्त औषधियोंका कल्क डाल, अग्निपर चढ़ाय तेलमें पकावे । इस चुक्रादि तेलको शरीरमें चुपड़नेसे विसूचिकाका नाश होजाताहै ॥ १३१ ॥

अथाण्डशोफप्रमेहमूत्रकृच्छ्राश्मरीचिकित्साः

अंडवृद्धिका उपाय ।

हिंगुजीरवराकल्कं कटुतैलेन पाचितम् ।
करंडघ्नं च विहितं त्रिफलाया रजोपि वा ॥ १३२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोमूत्रेण तु तप्तेन जायते चाधिकं फलम् ।
शरपुंखाजटाचूर्णं माममेकं निरन्तरम् ॥ १३३ ॥
अण्डवृद्धिविनाशाय टंकैकं सर्पिषा पिबेत् ।
पयसैरण्डतैलं वा सप्ताहं तत्र पाययेत् ॥ १३४ ॥
हपुषा जीरकं कुष्ठं वचैरण्डसमन्वितम् ।
अण्डशोफहरो लेपः कांजिकेन विमर्दितः ॥१३५॥

हींग, जीरा, हर्र, बहेडा, आमला, इनको बराबर ले पानीमें पीस कल्क करके सरसोंके तेलमें डालके पकावे। पकनेके उपरान्त उतारकर चुपड़े तो अंडवृद्धि मिटतीहै । हर्र, बहेड़ा, आमला, बराबर ले चूर्ण करके गायके मूत्रमें डाल गरम कर लेप करनेसे बड़ा फायदा होताहै। अर्थात् अंडवृद्धि शीघ्रतासे दूर होतीहै ॥ शरफोंखेकी जडका चूर्ण करके प्रतिदिन ४ मासा घीके साथ एक महीने तक पीया जाय तो अंडशोफका नाश होताहै । अरंडका तेल दूधके साथ सात दिन पीनेसे अंडशोफका नाश होजाता है। बड़े हाऊबेरकी जड, जीरा, कूट, बच, अरंडीकी मींग इन सबको बराबर ले कांजीके साथ पीसकर लेप करनेसे अंडशोफका नाश होजाताहै ॥ १३२–१३५ ॥

सर्वप्रमेहहरयोग ।

दाडिमीपुष्पकलिका खदिरं ससितोपलम् ।
टंकद्वयमितं चूर्णं प्रमेहघ्नमुदीरितम् ॥ १३६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिलाजतु ससूक्ष्मैलं शंखपुष्पी सितोपला।
सर्वप्रमेहहरणमेला वा शर्करान्विता॥ १३७॥
गुडूचीस्वरसः पीतो मधुना सर्वमेहहा॥ १३८॥

दाडिमके फूलकी कली, कत्था और मिश्री, इन सबको बराबर ले चूंर्ण करे। आधा तोला चूर्ण पानीके साथ खानेसे प्रमेहका नाश होजाताहै॥ १३६॥ शिलाजीत, छोटी इलायची, शंखपुष्पी, मिश्री, इन सबका चूर्ण करे। पानीके साथ आधा तोला चूर्ण खानेसे प्रमेह मिटताहै। अथवा खांड और इलायचीका चूर्ण करके खानेसे या खांडके शरबतमें बड़ी इलायचीका चूर्ण डालकर पीनेसे सब प्रकारके प्रमेह दूर होतेहैं॥ १३७॥ अथवा २ तोला गिलोयका रस शहतके साथ पीनेसे सब प्रकारके प्रमेह मिटतेहैं॥ १३८॥

मूत्रकृच्छ्रका उपाय।

एलोपकुल्यामधुकाश्मभेदकौंतीश्वदंष्ट्रावृषकोरुबूकैः।
शृतं पिबेदश्मजतुप्रगाढं सशर्करंमूत्रगदेऽश्मरीषु १३९॥

बड़ी इलायची, पीपल, मुलहठी, पाषाणभेद, रेणुका, गोखरू, विसौंटा, अंडकी जड़ इन सबको बराबर ले क्राथ करे। चौअन्नीभर शिलाजीत तथा शक्कर डालके क्राथ पीवे, इससे मूत्रसंबन्धी तथा पथरीका रोग दूर होताहै। (वायुके मूत्रकृच्छ्रमें पावतोला, पित्तकेमें आधा तोला, और कफका हो तो क्राथमें एक तोला खांड़ डालनी चाहिये॥ १३९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूत्रकृच्छ्रका दूसरा उपाय ।

वृषैलैरंडजं चूर्णं दध्ना कृच्छ्रहरं मतम् ।
तथा हिमपयः पीतं यवक्षारसितायुतम् ॥ १४० ॥

अडूसा, इलायची, अरंडकी जड़ इन तीनोंका चूर्ण करके दहीमें मिलाकर खानेसे मूत्रकृच्छ्रका नाश होताहै ॥ तैसेही गायके ठंढे दूधमें जवाखार और शक्कर डालकर पीनेसे भी मूत्रकृच्छ्रका नाश होताहै ॥ १४० ॥

मूत्ररोधका उपाय ।

पिष्ट्वा सुवर्चकोष्णेन कांजिकेन प्रलेपयेत् ।
रुद्धं मूत्रं निहन्त्याशु रंभाकंदस्तथैव च ॥ १४१ ॥

सज्जीखार कांजीमें पीसकर गरम करके लेप करनेसे बन्द हुआ मूत्र छूटताहै । ऐसे ही केलाकंदको पीसकर नाभिपर लेप करनेसे बन्द हुआ मूत्र छूटताहै ॥ १४१ ॥

मूत्ररोध और मूत्रकृच्छ्रपर उपाय ।

हरीतकीगोक्षुरराजवृक्षपाषाणभिद्धन्वकवासकानाम् ॥
क्राथंपिबेन्माक्षिकसंप्रयुक्तंकृच्छ्रेसदाहेसरुजेविबंधे ४२

हर्र, गोखरू, अमलतास, पाषाणभेद, धमासा, विसोंटा, इन औषधियोंके क्राथमें शहत डालकर पीनेसे दाह और पीड़ा सहित मूत्रकृच्छ्र रोग मिटताहै; तथा अटकाहुआ मूत्र छूटताहै ॥ १४२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूत्रकृच्छ्रपर उपाय।

एवारुबीजं त्रिफला वरं गोक्षुरजं रजः।
तप्तोदकेन संपीतं मूत्रकृच्छ्रहरं परम् ॥ १४३ ॥

ककड़ीके बीज, हर्र, बहेडा, आमला, सेंधा और गोखरू इन औषधियोंका चूर्ण करके ४ मासा गरमपानीके साथ पीनेसे मूत्रकृच्छ्र रोग दूर होताहै ॥ १४३ ॥

पथरीका उपाय।

वरुणस्य त्वचं श्रेष्ठां शुंठीगोक्षुरसंयुताम्।
पाचयित्वा शृतं तस्य यवक्षारगुडान्वितम्॥ १४४॥
वाताश्मरीं निहन्त्याशु चिरकालानुबंधिनीम्।
शुठ्याग्निमंथपाषाणभेदोवरुणगोक्षुरैः ॥ १४५ ॥
सारग्वधमयैः क्काथो हिंगुक्षारवरान्वितः।
अश्मरी मूत्रकृच्छ्रं च नाशमायाति निश्चितम् १४६

वरनाकी छाल, हर्र, बहेड़ा, आमला, शोंठ, गोखरू, इन सबको बराबर ले क्काथ करके उसमें ४ मासा जवाखार और गुड़ एक तोला डालकर पिलाना चाहिये। इस क्काथसे पथरीका रोग–जोकि बहुत दिनसे वातके कारण हुआ है, शीघ्रतासे मिटजायगा ॥ शोंठ, अग्निमंथ (अरणि-या–रनि) की जड़, पाषाणभेद, वरनाकी छाल, गोखरू, अमलतास इन औषधियोंका क्काथ करके उसमें हींग, जवा-खार, हर्र, बहेड़ा और आमलेका चूर्ण पाव २ तोला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालकर पीनेसे पथरी तथा मूत्रकृच्छ्र अवश्य ही दूर होताहै ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥

अथापस्मारचिकित्सा ।

अपस्मारादिपर पौष्करादि क्वाथ ।

पौष्करं पिप्पलीमूलं ब्राह्मी शुंठी हरीतकी ।
शठी किरातं तिक्तं च शिरीषं रोहितं वचा॥१४७॥
दार्वी मुस्ता देवदारु कुष्ठमेषां शृतं पिबेत् ।
अपस्मारज्वरोन्मादविसूचीकफनाशनम् ॥१४८॥

पुष्करमूल, पीपलामूल, ब्राह्मी, शोंठ, हर्र, कचूर, चिरायता, कुटकी, शिरसकी छाल, लाल रोहेड़ा, वच, दारु हलदी, मोथा, देवदारु कूट इन औषधियोंका क्वाथ पीनेसे अपस्मार (मृगी), ज्वर, उन्माद, विसूचिका और कफका नाश होताहै ॥ १४७ ॥ १४८ ॥

अपस्मारका दूसरा उपाय ।

यःखादेन्मुद्गभक्ताशी माक्षिकेण वचारजः ।
अपस्मारं तथोन्मादं चिरोत्थं नाशयेद्ध्रुवम्॥१४९॥
एवं विंशद्दिनं स्थाप्य त्र्यूषणं स्नुक्पयस्यथ ।
जलेन पिष्टापस्मारे नावनं योग्यमीरितम्॥१५०॥
शंखपुष्पी वचाकुष्ठैर्ब्राह्मीरससमन्वितैः ।
घृतं पक्वमपस्मारं पानाद्धन्ति न संशयः ॥१५१॥

जो मनुष्य शहतके साथ वचका चूर्ण खाय, भात और मुँगका पथ्य करे, अर्थात् इनका ही भोजन करे तो उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगी रोग तथा उन्माद रोग बहुत कालसे हुआ हो तो भी नाशको प्राप्त होगा। ऐसेही सोंठ, पीपल और मिर्च इन तीनोंको सेंढके दूधमें २० दिन तक रक्खे। फिर पानीके साथ पीसकर नस्य लेनेसे मृगीरोगका नाश होजाताहै। शंखपुष्पी, वच, कूठ, ब्राह्मीका रस, इन सबका कल्क करके घीमें पकावे, इस घीके पीनेसे अवश्य मृगीरोग नाशको प्राप्त होगा ॥ १४९ ॥ १५० ॥ १५१ ॥

अथ कुष्ठरोगचिकित्सा।

कोढ़पर पटोलादि चूर्ण।

पटोलत्रिफलावासाखदिरामृतनिम्बजम्।
चूर्णं जलेन पातव्यं कुष्ठव्याधिविनाशनम्॥१५२॥

परवल, हर्र, बहेरा, आमला, विसौंटा, खैरसार अथवा कत्था; गिलोय, नीमकी छाल इनको बराबर ले चूर्ण कर ४ मासा चूर्ण पानीके साथ पीनेसे कुष्ठ व्याधिका नाश होताहै॥ १५२॥

दूसरा उपाय।

मंजिष्ठा त्रिफला तिक्ता वचा दारुनिशायुतम्।
गूडची च वृषो निंबो विडंगं चूर्णमप्यदः ॥१५३॥

मजीठ, हर्र, बहेड़ा, आमला, कुटकी, बच, देवदारु, हलदी, दारुहलदी, गिलोय, अडूसा, नीमकी छाल, वायविडंग, इनका चूर्ण करके ऊपर कहे अनुसार खानेसे कोढ मिटताहै ॥ १५३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्व कुष्ठका उपाय ।

निम्बत्वचाकृतः क्वाथः सर्वकुष्ठविनाशनः ॥१५४॥

नीमकी छालका काथ करके तीन महीने तक बराबर पीनेसे समस्त कोढ दूर होतेहैं ॥ १५४ ॥

श्वेत कुष्ठका उपाय ।

गुंजाकुष्ठाग्निषड्ग्रथालेपो निंबरसान्वितः ।
कांजिकेनान्वितश्चापि श्वेतकुष्ठहरः परः ॥१५५॥

गुंजा (घुँघची), कूठ, चित्रककी जड़, बच, इन औषधियोंको नीमके रसमें अथवा कांजीमें लेप करनेसे श्वेत कोढका नाश होताहै । यह उपाय श्रेष्ठ है ॥ १५५ ॥

श्वेतकुष्ठका दूसरा उपाय ।

शशिलेखाशिलावह्निवंगभस्मभवोऽथवा ।
काष्ठोदुम्बरमूलत्वक्लेपो वा बहुसम्मतः॥१५६॥
खदिरामलकक्काथो बाकुचीचूर्णसंयुतः ।
प्रातरुत्थायपातव्यः श्वेतकुष्ठहरः परः ॥ १५७॥

वापची, शिलाजीत, चित्रककी जड़, वंगभस्म, इन औषधियोंका लेप करनेसे श्वेत कुष्ठ मिटताहै । अथवा, दारु हलदी और गूलरके मूलकी छालका लेप करनेसे श्वेत कुष्ठ मिटताहै ऐसा बहुतसे वैद्योंका अभिप्रायहै । खैरकी छाल तथा आमले बराबर लेकर क्वाथ करे उसमें वापचीका चूर्ण डालकर सबेरे उठकर पीनेसे श्वेत कुष्ठ मिटताहै । यह उपाय उत्तम है ॥ १५६ ॥ १५७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कण्डुरोगका उपाय ।

शशिलेखानिम्बपत्रनिशामलकजं रजः ।
गोमूत्रेण नरः पीत्वा कण्डूरोगं व्यपोहति ॥ १५८ ॥

वापची, नीमके पत्ते, हलदी, आमला, इनको बराबर ले चूर्ण करके गायके मूत्रके साथ पीनेसे कण्डूरोग दूर होताहै ॥ १५८ ॥

खुजलीका उपाय ।

महिषीसर्पिषा लेपः सिन्दूरमरिचोद्भवः ।
पामाहरोथ दरदः कुष्ठम्रक्षणगंधकैः ॥ १५९ ॥

सिन्दूर और मिर्चका चूर्ण करके उसको भैंसके घीमें मिलायकर लेप करनेसे खुजली मिटजातीहै । तैसेही शिंगरफ, कूट, अमलसार गन्धक, इन औषधियोंके चूर्णको मक्खनमें मिलाय चुपड़नेसे खुजली मिटतीहै ॥ १५९ ॥

पामा, विचर्चिका और दादोंपर लेप ।

निशाविडंगसिन्दूरचक्रमर्दांश्च पेषयेत् ।
धत्तूरनिंबतांबूलीरसैर्लेपः समाचरेत् ।
पामाविचर्चिकादद्रुनाशनं नास्त्यतः परम् ॥ १६० ॥

हलदी, वायविडंग, सिन्दूर, चकवड़के बीज इन सबको पीसकर धतूरेके, नीमके तथा पानके रसमें घोटकर पीछे उनका लेप करे । इस लेपसे खुजली, विचर्चिका रोग और दादोंका नाश होताहै; इससे अच्छा दूसरा उपाय नहीं है ॥ १६० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचर्चिकाका उपाय ।

अर्कपत्रभवं भस्म नवनीतेन संयुतम् ।
विचर्चिकाहरं शीघ्रं लेपाच्चात्र न संशयः॥१६१॥

आकके पत्तोंका भस्म करके उसको मक्खनके साथ मिलाय लेप करे । इससे निःसन्देह विचर्चिकाका नाश होताहै ॥ १६१ ॥

पामा आदिपर लेप ।

गंधं तुत्थं च कुंकुष्ठं बाकुची स्वर्जिका निशा ।
सर्वतो द्विगुणं चक्रमर्दं च कटुतैलयुक् ॥ १६२ ॥
लेपं कृत्वाथ महीषीपुरीषैः स्नानमाचरेत् ।
नाशमायान्ति नियतं पामादद्रुविचर्चिकाः ॥ १६३ ॥

गंधक, नीलाथोथा, मुरदारसिंग, बापची, सज्जीखार, हलदी, इन सबको बराबर लेवे और सबसे दूने चकवड़के बीज लेवे । इन सबको सरसोंके तेलमें घोटकर लेप करे । फिर भैंसका गोबर शरीरमें चुपड़कर स्नान करना चाहिये । ऐसा करनेसे पामा, दाद और विचर्चिकाका निश्चय नाश होताहै ॥१६२॥ १६३ ॥

कंडूपर दूर्वादि लेपं ।

दूर्वानिशाकल्कलेपः कण्डूपामाविनाशनः ॥१६४॥

दूब और हलदीको पानीमें पीसकर लेप करनेसे खुजली तथा पामाका नाश होताहै ॥ १६४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषादिककी सूजनपर लेप।

काला ब्राह्मी हरिद्रा च विडंगं गदपौष्करे।
शुंठचर्जकं चुक्रदलं नीलिकोषणगैरिकैः ॥ १६५ ॥
मूलं कर्कोटकस्यापि मूत्रेण सह पेषितम्।
विषजं दोषजं शोफं रक्तजं लेपतो हरेत् ॥ १६६ ॥

काली जीरी, ब्राह्मी, हलदी, वायविडंग, कूट, पुष्करमूल, सोंठ, वापची (अथवा सफेद तुलसीके पत्ते), चूकेके पत्ते, गिलोय, मिर्च, गेरू, बांझ ककोड़ेकी जड़, इन सबको गायके मूत्रमें पीसकर लेप करनेसे जहरसे उत्पन्न हुई अथवा वातादि दोषसे उत्पन्न अथवा रुधिरके विकारसे उत्पन्न हुई सूजनका नाश होताहै ॥ १६५ ॥ १६६ ॥

लूताका उपचार।

स्योनाकहिमकुष्ठानि सारिवा समभागिका।
लूताव्यथाहरो लेपः सद्यः प्रत्ययकारकः ॥ १६७ ॥

लोध, कपूर, कूट, सारिवा इन सबको बराबर ले पानीमें लेप करनेसे लूतारोग[1] मिटताहै ॥ १६७ ॥

सिध्म नामके कोढका उपाय।

कदलीपत्रजं भस्म हरिद्रा तत्समा भवेत्।
पिष्ट्वा जलेन तल्लेपः सिध्मरोगहरः परः ॥ १६८॥
मूलिकाबीजसौभग्यहिमेंदुहरितालकम्।
जम्बीररससंपिष्टं लेपः सिध्महरः परः ॥ १६९ ॥

---

१ अकस्मात् हाथ पांव फूलआवें, उसमें चुल हो, पके उसको लूतारोग कहते हैं। कितने ही ग्रंथकारोंका मत है कि यह दूषित विष है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केलेके पत्तोंका भस्म और उसकी बराबर हलदी लेकर दोनोंको पानीमें पीसकर लेप करनेसे सिध्म (छीप) नामक कोढ़ जातारहताहै । मूलीके बीज, सुहागा, चंदन, कपूर, हरताल, इन सबको जंबीरी नींबूके रसमें पीसकर लेप करनेसे सिध्म नामक कोढ़ दूर होताहै ॥ १६८ ॥ १६९ ॥

अथ वातव्याधिस्नायुक्षतदाहकफरोग-चिचित्सा ।

वातरोगका उपाय ।

निर्गुण्डी मार्कवं भंगा शुंठी चूर्णं मरुद्धुजि ॥ १७० ॥

सँभालू, भांगरा, भांग और सोंठ, इन औषधियोंका चूर्ण करे । उस चूर्णको (बराबर खांड़ मिलाय) प्रतिदिन पानीके साथ ४ मासा खानेसे वातव्याधि मिटती है ॥ १७० ॥

वातरोगपर अश्वगन्धादि मोदक ।

अश्वगन्धाकणाशुंठीविडंगाकल्लदीप्यकैः ।
कारवीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकसंयुतैः ।
गुडेन मोदकाः श्रेष्ठा वातव्याधिविनाशनाः ॥ १७१ ॥

असगंध, पीपल, सोंठ, बायविडंग, अकरकरा, अजवायन, काली जीरी, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करे । दूना गुड़ डालकर डेढ डेढ तोलेके लड्डू बनावै । प्रतिदिन एक २ लड्डू खाय । इसके खानेसे वायुरोग मिटजाताहै ॥ १७१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वायु और कफके रोगोंमें बच्छनागादि गुटिका ।

विषस्य भागमेकं तु टंकणस्यत्रयं तथा ।
वेदभागं च मरिचं नागरं च विचूर्णयेत् ॥ १७२ ॥
आर्द्रकस्य रसैः कार्या गुटिका रक्तिकासमा ।
वातश्लेष्मजरोगाणां नाशिनी वह्निवर्द्धिनी ॥१७३॥

शुद्ध सिंगिया बच्छनाग १ तो०, सुहागा ३ तो ०, मिर्च ४ तो०, शोंठ ४ तो०, इन सबका चूर्ण करे, फिर उसको अदरखके रसमें घोटकर एक २ रत्तीकी गोली बनाय छायामें सुखावै । सांझ सबेरे एक २ गोली खानेसे अनेक प्रकारके वायु तथा कफके रोग मिटतेहैं । तथा जठराग्नि प्रदीप्त होतीहै ॥ १७२ ॥ १७३ ॥

वातरोगपर धत्तूर तेल ।

धत्तूरस्य रसैर्गुंजाविषधत्तूरबीजकैः ।
पक्कं तैलं समस्तस्य वातव्याधेर्विनाशनम् ॥१७४॥

धत्तूरेके पत्तोंका रस तथा चोटली बच्छनाग और धतूरेके बीज इन सबका कल्क करके तेल पकावे । इस तेलको चुपड़नेसे सब प्रकारकी वातव्याधि दूर होतीहै ॥ १७४ ॥

वातरोगपर लहसन ।

रसोनो गोपयःसिद्धो वातव्याधिहरः परः ॥ १७५ ॥

लहसनको गायके दूधमें रांधकर खानेसे वातव्याधिका नाश होताहै, यह उपाय अत्यन्त उत्तम है ॥ १७५ ॥

५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वातरोगपर त्रयोदशांग गुग्गुलु ।

शिवाश्वगंधा हपुषा गुडूची शतावरी गोक्षुरकश्चरास्ना। श्यामाशताह्वाचशठीयवानी सनागरातीससमंविचूर्ण्य सर्वैःसमं गुग्गुलुमत्र दद्यात् क्षिपेदिहाज्यं च तदर्द्धभागैः। तद्भक्षयेदर्धपिचुप्रमाणं प्रभातकाले सुरयाथ यूषैः॥ मद्येन वा कोष्णजलेन वापि क्षीरेण वा मांसरसेन वापि। त्रिकग्रहे जानुहनुग्रहे च वाते भुजस्थे चरणस्थिते च॥ संधिस्थितेचास्थिगतें च तस्मिन्मज्जास्थितेस्नायुगतेच कोष्ठे रोगान्हरेद्वातकफानुबद्धान्वातोरितान्हृद्ग्रहयोनि-दोषान्। भग्नास्थिविद्धेषु च खंजतायां संगृध्रसीके खलु पक्षपाते । महौषधं गुग्गुलुमेतमाहुस्त्रयोदशांगं भिषजः पुराणाः॥ १७९-१८०॥

हर्र, असगंध, हाऊबेरकी जड़, गिलोय, शतावरी, गोखरू, रास्ना, पीपल, सौंफ, कचूर, अजवायन, सोंठ, अतीसकी कली, इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करे। फिर सब चूर्णकी बराबर उसमें गूगल डाले। तथा गूगलसे आधा घी उसमें डाले। फिर उस गूगलको प्रतिदिन सबेरेही ८ मासा लेकर सुराके साथ जूसके साथ अथवा मद्यके साथ अथवा गरम पानीके साथ, अथवा दूधके साथ अथवा मांसरसके साथ खाना चाहिये। इस गूगलके खानेसे—त्रिक नामक संधिको जो वायुने पकड़ लिया हो, घुटनेको जो वायुने पकड़ा हो, हनुग्रह हुआ हो अथवा हाथ पांवको वायुने पकड़ लिया हो, जोडों-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में, हड्डियोंमें, मज्जामें, नसोंमें या कोठेमें वायुका उपद्रव हुआ हो तो यह सर्व वायुके तथा कफयुक्त वायुके समस्त रोग मिटतेहैं। वायुसे हुआ हृद्ग्रह (छातीका अकड़ जाना) योनि-दोष, हड्डीका विचलजाना, विंधजाना, लंगड़ेपनका दोष, गृध्रीसी और पक्षाघातका दोष यह सब रोग इस गूगलसे दूर होतेहैं। इस बड़ी औषधिको प्राचीन वैद्यलोग "त्रयोदशांगगुग्गुलु" यानी तेरह औषधियोंके साथ तैयार किया हुआ गुग्गुलु कहतेहैं॥ १७६ ॥ १७७ ॥ १७८ ॥ १७९ ॥ १८० ॥

सिध्म नामक कोढका उपाय।

हिमगंधकजो लेपो वह्निसोमलजोऽपि वा।
सौभाग्यहिमजोवापिलेपः सिध्मविनाशनः १८१॥

कपूर और गन्धक बराबर लेकर लेप करनेसे अथवा चित्रक और सोमल बराबर एक साथ पीसकर लेप करनेसे अथवा सुहागा और कपूर एक साथ पीसकर लेप करनेसे सिध्म नामक कोढ मिटताहै ॥ १८१ ॥

बालेका उपाय।

स्नायुरोगेऽर्धसंदग्धां शुक्तिकां दधिसंयुताम्।
टंकद्वयमितां वैद्यः पाययेत् सप्तवासरम् ॥ १८२॥

सीपीको आधी जलायकर पीसके चूर्ण करले। तिस चूर्णको दहीके साथ आठ मासाभर सातदिन रोगीको वैद्य पिलावे तो बालाका रोग नष्ट हो ॥१८२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शस्त्रक्षतपर उपचार ।

शस्त्रक्षते काकजंघामूलं पिष्ट्वा प्रलेपयेत् ।
रक्तप्रवाहपीडादि तत्क्षणाद्विनिवर्त्तते ॥ १८३ ॥

काकजंघा (सिकसीनी) की जड़ पानीमें पीसकर जहां शस्त्रका घाव हुआ हो तहां लेप करनेसे बहताहुआ रुधिर बन्द होताहै । पीड़ा भी तत्काल जातीरहतीहै ॥ १८३ ॥

वातरोगपर रास्नादि क्वाथ ।

रास्नामृतादेवदारुशुंठ्यैरंडकषायकः ।
मधुना सकलान्रोगान्वातजानाशु नाशयेत् ॥ १८४ ॥

रास्ना, गिलोय, देवदारु, सोंठ, रेंडीकी जड, इन औषधियोंका क्वाथ करके उसमें आधा तोला शहत डालकर पीनेसे सब प्रकारके वायुरोग मिटतेहैं ॥ १८४ ॥

वातादिरोगपर शुंठ्यादि अवलेह ।

शुंठ्यश्वगंधा सतिला सघृता ससितोपला ।
वातव्याधिहरा श्रेष्ठा पुष्टिदा मेहनाशिनी ॥ १८५ ॥

सोंठ, असगन्ध, काले तिल, मिश्री, इन सबको बराबर लेकर चूर्ण करे । घीमें डालकर खानेसे वायुके रोगका नाश होताहै । पुष्टि बढतीहै, प्रमेहका नाश करताहै । यह उपाय उत्तम है ॥ १८५ ॥

पित्तके शमन करनेका उपाय ।

आमलोशीरकर्पूरहिमैलाः पित्तनाशनाः ॥ १८६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमला, खश, कपूर, सफेद चंदन, इलायची, इन सबको बराबर ले कुचल कर मिट्टीके वासनमें डालै, तथा उसमें थोड़ा सा पानी डालकर उबाल ले । फिर उस वासनको रात्रिके समय खुली जगहमें रक्खे । सबेरे उन औषधियोंको पीसकर पानी नितार लेवे । इस पानीके पीनेसे पित्त शान्त होताहै ॥ १८६ ॥

पाददाहका उपाय ।

तंडुलामलकी मांसी वदरीपल्लवान्विता ।
पादयोः पयसा लेपो दाहमाशु व्यपोहति ॥ १८७ ॥

चावल, आमला, बालछड़, बेरीके पत्ते इन सबको मिलाय दूधके साथ पीसकर पांवमें चुपड़े तो पांवका दाह दूर होवे ॥ १८७ ॥

सर्वांगदाहका उपाय ।

शतधौतघृतैर्लेपो दाहघ्नः सर्वसंमतः ॥ १८८ ॥

घीको सौबार धोकर शरीरमें लेप करनेसे दाहका नाश होताहै । यह समस्त वैद्योंका मत है ॥ १८८ ॥

वमनका उपाय ।

खर्जूरैलापद्मबीजं मधुना छर्दिनाशनम् ॥ १८९ ॥

खजूर, इलायची, कमलककड़ी, इन तीनोंको बराबर ले बारीक चूर्ण करके शहतके साथ चाटै तो वमन बन्द होताहै ॥ १८९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कफव्याधिका उपाय ।

मृतं ताम्रं च मरिचं लवंगं कुंकुमं कणाम् ।
भार्ङ्गीसमांशं संचूर्ण्य नागवल्लीदलान्वितम् ।
माषैकं सार्धमाषं वा कफव्याधिविनाशनम् १९० ॥

शुद्ध ताम्रभस्म, मिर्च, लवंग, केशर, पीपल, भारंगी, इन सबको बराबर ले चूर्ण करके पानके पत्तोंमें उसकी आध २ मासेकी गोली बनावे । यह गोली एक या दो रोगीको बलाबल देखकर शहत या आर्द्रकके रसके साथ देनेसे सब प्रकारकी कफव्याधियाँ दूर होतीहैं ॥ १९० ॥

कासश्वासादिका उपचार ।

कण्टकारी कणा भार्ङ्गी लवंगं नागरं रजः ।
तप्तोदकेन संपीतं कासश्वासकफापहम् ॥ १९१ ॥

छोटी कटेरी, पीपल, भारंगी, लौंग, शोंठ, इन सबको बराबर ले बारीक चूर्ण कर ४ मासा चूर्ण गरम पानीके साथ पिये तो खाँसी, दमा तथा कफ दूर होताहै ॥ १९१ ॥

अथ गंडमालादंतमुखनासानेत्रकर्ण-शिरोरोगादिचिकित्सा ।

गंडमालापर क्वाथ ।

त्रिफलाकांचनारत्वक्कणाचूर्ण कवोष्णकैः ।
संपीतं गलगंडघ्नं गंडमालापचीहरम् ॥ १९२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर्र, बहेड़ा, आमला, कचनारकी छाल, पीपल, इन औषधियोंका चूर्णकर गरम पानीके साथ पीनेसे गंडमाला तथा उसीका अवस्थाविशेष अपची रोग दूर होजाताहै ॥ १९२ ॥

कंठमालापर लेप ।

तंडुलानां जलैर्लेपो भार्ङ्गीशुंठीविनिर्मितः ।
मासमात्रप्रयोगेण गंडमालापचीहरः ॥ १९३ ॥

भारंगी और सोंठ बराबर लेकर दोनोंको चावलोंके धोवनमें पीसकर एक मास तक लेप करनेसे गंडमाला और उसीका अवस्थाविशेष अपची रोग दूर होताहै ॥ १९३ ॥

गलगंडादिपर गुटिका ।

त्रिफलायास्त्रयो भागा व्योषं तद्द्विगुणं मतम् ।
तस्माच्च द्विगुणं देयं कांचनारस्य वल्कलम् १९४॥
एकीकृतानां चूर्णानां समो देयोऽथ गुग्गुलुः ।
क्षौद्रेण गुटिका कार्या गलगंडापचीहरी ॥ १९५ ॥

हर्र, बहेड़ा,आमला, इन सबको मिलाकर तीन भाग यानी प्रत्येक एक २ तोला ले । त्रिकुटा इससे दूना ले यानी सोंठ २ तोला, मिर्च २ तोला, पीपल २ तोला, कचनारकी छाल १२ तोला, इस प्रकार लेकर सबका एक साथ चूर्ण करे । फिर जितना सबका वजन हो उतना उसमें गूगल डाले । शहतके साथ आठ २ मासेकी गोली बनावे यह गोली (प्रतिदिन एक२खाय इस प्रकार ३१ दिन) खानेसे गंडमाला तथा अपची दूर होतीहै ॥ १९४ ॥ १९५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुखपाकका उपाय।

एला शुभा च खदिरं मुखस्थं मुखपाकजित् १९६॥

इलायची, वंशलोचन, खैरसार, इन तीनोंको बराबर ले बारीक चूर्ण करके (गूलरके दूधमें गोली बाँधकर) मुखमें रखनेसे मुखपाक जातारहताहै ॥ १९६ ॥

दांतमेंसे निकलतेहुए रुधिरका उपाय।

वासारसाज्यं मधुना संयोज्य सततं लिहेत्।
सप्ताहं दंततो रक्तस्रावस्तस्य विनश्यति ॥ १९७॥

विसोंटेके पत्तोंके रसमें घी तथा शहत मिलाय सात दिन तक चाटनेसे दांतोंमेंसे गिरता हुआ रुधिर बन्द होताहै १९७॥

दन्तरोगका साधारण उपाय।

वृषाब्दखदिरं लोध्रं मंजिष्ठाकुष्ठतिक्तकम्।
घर्षणाद्दंतमलरुक्कृमिरक्तगदान्हरेत्॥ १९८॥

विंसोंटेके जड़की छाल, खैरसार, लोध, मजीठ, कूठ, कुटकी, इन औषधियोंको बराबर ले बारीक चूर्ण कर दांतोंमें घिसे, दांतोंका मैल जातारहताहै, दांतका दर्द मिटजाताहै। दांतोंके कीड़े तथा लोहूसे मसूडोंका फूलना नाशको प्राप्त होताहै ॥ १९८ ॥

मुखपाकपर कुल्ला।

जातिपत्रामृताद्राक्षावासादार्वीफलत्रिकैः।
क्वाथःक्षौद्रयुतः पीतो गंडूषान्मुखपाकजित् १९९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चमेलीके पत्ते, गिलोय, दाख, विसौंटा, दारुहलदी, हर्र, बहेड़ा, आमला, इन औषधियोंको बराबर लेकर तिसमें शहत डाले । इस क्वाथके द्वारा कुल्ला करनेसे मुखके भीतरका पाक मिटताहै ॥ १९९ ॥

मुहासोंका उपाय ।

पद्मकंटकवद्धलेपो वचालोध्रकटुत्रिकैः ।
व्यंगघ्नः सतिलैर्लेपो मांसीत्रिकटुजीरकैः॥२००॥

वच, लोध, सोंठ, पीपल, कालीमिर्च, इन औषधियोंको बराबर ले चूर्ण करके पानीमें मिलाय लेपकरनेसे मुखके कांटे-दार मुहासे दूर होतेहैं, तिल, बालछड़, सोंठ, पीपल, मिर्च, जीरा, इनको बराबर ले पानीमें पीसकर मुखपर लेप करनेसे जवानीके कारणसे जो मुहासे मुखपर उत्पन्न होतेहैं वह दूर होजातेहैं ॥ २०० ॥

नासिकासे निकलतेहुए लोहूका उपाय ।

तांबूलस्य रसैर्वापि निशालोध्रवरामयैः ।
नस्यो दाडिमपुष्पोत्थो रसो दूर्वाभवोऽथवा ॥
सुगंधजलजो वापि नासिकास्रावरक्तजित्॥२०१॥

पानके रसकी बूँदें नाकमें डालनेसे अथवा हलदी, लोध, हर्र, बहेडा, आमला, और कूटका चूर्ण सूँघनेसे, अथवा दाडिमके फूलका रस सूँघनेसे दूधका रस सूँघनेसे या गुलाब-जलादि किसी सुगन्धित पानीके सूँघनेसे नासिकासे बहता-हुआ लोहू बन्द होताहै ॥ २०१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्लेष्माका उपाय ।

त्रिकटुर्गुडसंमिश्रः प्रातः प्रातर्निषेवितः ।
शिरोगौरवश्लेष्मा दि प्रतिश्यायहरो मतः॥२०२॥

सोंठ, पीपल, मिर्च इन सबका चूर्ण करके तिसमें चौगुना गुड़ डाले, फिर गोली बनावे। प्रतिदिन सबेरे यह गोली खानेसे शिरका भारीपन तथा श्लेष्मा और प्रतिश्याय रोग दूर होताहै ॥ २०२ ॥

नासारोगका उपाय ।

नस्यं मरिचबंदालफलोत्थमपि तादृशम् ॥ २०३॥

मिर्च और देवदालीका फल इन दोनोंको बारीक पीसकर सूंघनेसे भी उपरोक्त रोग मिटताहै ॥ २०३ ॥

सब नेत्ररोगोंमें लेप ।

यष्टीगैरिकसिंधूत्थदार्वीताक्ष्यैंः समांशकैः ।
सर्वनेत्रामयघ्नोऽयं बहिर्लेपो न संशयः ॥ २०४ ॥

मुलहठी, गेरू, सेंधा, दारुहलदी, रसौत, इन सबको बराबर ले पानीमें बारीक पीसकर आँखोंके बाहिरी भागपर लेप करनेसे निस्सन्देह अनेक प्रकारके नेत्ररोग[1] दूर होतेहैं २०४

दुखतीहुई आँखोंमें अंजन ।

सैन्धवं कटुतैलेन कांस्यपात्रे च घर्षयेत् ।
नेत्राभिष्यंदरोगघ्नमंजनं संप्रकीर्त्तितम् ॥ २०५ ॥

१ नेत्ररोग ९४ प्रकारके होतेहैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरसोंके तेलको काँसीके पात्रमें डालकर तिसमें सेंधा-लवण घिसे फिर उसका अंजन करनेसे आँखें दुखने आई हों तो अच्छी होजातीहैं ॥ २०५ ॥

दूसरा उपाय ।

स्फटिका सैन्धवं तार्क्ष्यं स्तन्येन च ततोऽधिकम् २०६ ।

फटकिरी, सेंधा, और रसौत स्त्रीके दूधमें मिलाय तिसका अंजन करनेसे आंखें दुखनेके रोगको अच्छा फायदा होताहै ॥ २०६ ॥

नेत्ररोगपर अंजन ।

रजनीरससंपिष्टं कतकं जसदं मृतम् ।
अंजनं नेत्ररोगघ्नं सौवीरं वा सुशोधितम् ॥ २०७ ॥

हलदीके रसमें अथवा हलदीके क्काथमें निर्मलीका फल, मारा हुआ जस्त अथवा फटकिरी इन तीनोंमेंसे किसी एक औषधिका अंजन करनेसे नेत्ररोग दूर होताहै । अथवा यह तीनों एक साथ घिसकर अंजन करे तो भी नेत्ररोग दूर होताहै । अथवा शुद्ध किया हुआ सुरमा हलदीके रसमें पीस-कर अंजन करनेसे भी नेत्ररोग मिटताहै ॥ २०७ ॥

रतोंधेआदिमें अंजन ।

जातीरसैस्तु नक्तांध्यं सौवीरं रजनीयुगम् ।
सपुष्पपटलं वापि अक्ष्णां मलहराञ्जनम् ॥ २०८ ॥

चमेलीके पत्तोंके रसमें शुद्ध सुरमा, हलदी, और दारु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलदी मिलाय तिसका अंजन करनेसे रतौंधा दूर होताहै। वैसेही आंखमें पड़ाहुआ फूला और जाला दूर होताहै। तथा नेत्रोंका मलभी दूर होताहै ॥ २०८ ॥

पलकरोगका उपाय।

उत्पाट्य पक्ष्मलोमानिपक्ष्मकोपेऽतियत्नतः।
कुर्याल्लेपं च मरिचैर्गुडगैरिकसंयुतैः ॥ २०९ ॥

जिसकी आंखोंके पलकके बाल आंखमें घुसजाते हों या चुभते हों, उनको बड़ी सावधानीसे उखाड़डालना चाहिये। फिर काली मिर्च, गुड़, और गेरू बराबर लेकर उस जगहपर लेप करे ॥ २०९ ॥

नेत्रवातका उपाय।

शुद्धं सूतं च जसदं खर्परं विद्रुमं समम्।
मौक्तिकं चार्धभागं स्यादुष्ट्रदंताःकुलत्थकः २१०॥
वनजः कांस्यजे पात्रे छागीदुग्धेन घर्षयेत्।
संचूर्ण्य सबलं वातमंजनं नाशयेदिदम् ॥ २११ ॥

शुद्ध कियाहुआ पारा, सीसेका भस्म, खपरिया, प्रवाल-भस्म, इन सबको एक २ मासा ले। मोती आधा मासा लेना चाहिये। ऊंटका दांत, कुलथी, जंगली कुलथी, इनको एक एक मासा लेवे। फिर इन सबका बारीक चूर्ण करके बकरीके दूधके साथ (३ दिन) घोटे। इस औषधिका अंजन करनेसे महाबलवान् नेत्रवात रोगका नाश होताहै ॥ २१० ॥ २११ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रतोंधेपन आदिपर अंजन ।

मरिचं जसदं ताम्रं स्फटिका चाहिफेनकम् ।
शुक्तिचूर्णं समं किञ्चित्तुत्थकेन समन्वितम् ॥२१२॥
गोघृतेन च संघृष्य कास्यपात्रे तदंजनात् ।
नक्तांध्यं पटलं कांचं गदं हन्ति न संशयः ॥२१३॥

मिर्च, जस्तका भस्म, ताम्रभस्म, फटकरीकी खील, अफीम, सीपीका चूर्ण, इन सबको बराबर लेकर थोडासा नीला-थोथा डालै । फिर उन सबको कांसीके पात्रमें डालै । फिर उसमें गायका दूध डालकर (३ दिन तक) घोटे । यह अंजन आँखमें आँजनेसे रतोंधा, जाला, कांच, यह सर्व-नेत्ररोग निश्चय दूर होतेहैं ॥ २१२ ॥ २१३ ॥

नेत्ररोगपर पोटली ।

सौराष्ट्री शशिलेखा च निशालोध्राहिफेनकम् ।
जीरक तार्क्ष्यजं पिष्ट्वा समं कुर्याच्च पोटलीम् ॥२१४॥
त्रिफलाजलयोगेन कृत्वार्द्रां नयने न्यसेत् ।
सर्वपीडाविनिर्मुक्तं निर्मलं नयनं भवेत् ॥ २१५ ॥

फटकिरी, वापची, हलदी, लोध, अफीम, जीरा, रसौत, इन सबको बराबर ले बारीक पीसे । और पोटली करे । फिर हर्र, बहेड़ा और आमलेके क्वाथमें तिसे गीलीकर नेत्रके ऊपर रस निचौड़ै । इससे सब प्रकारके नेत्ररोग दूर होकर आंख निर्मल होगी ॥२१४॥ २१५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेत्ररोगपरःसुरमाआदि अंजन ।

अंजनं सैन्धवं शंखमहिफेनं मनःशिला ।
सितोपला त्रिकटुकं कतकं सूक्ष्मचूर्णितम् ॥ २१६ ॥
अंजनं पयसाज्येन तिमिराणि च पुष्पकम् ।
नक्तांध्यं पटलं हन्ति नेत्रपीडां सुदुस्तराम् ॥२१७॥

काला सुरमा, सेंधा, शंख, अफीम, मैनशिल, शक्कर, सोंठ, पीपल, मिर्च, निर्मलीका फल, इन सबको बराबर ले सूक्ष्म चूर्ण करे। फिर उस चूर्णको घी तथा दुग्धमें मिलाकर अंजन करनेसे तिमिररोग, आँखमें फूला पड़नेका रोग, रतौंधा, जाला, और दूसरी अनिवार्य नेत्रपीड़ा मिटतीहै ॥ २१६ ॥ २१७ ॥

कर्णरोगका प्रतीकार ।

अर्कपत्ररसोनेन युक्तं तप्तं हि तद्रसम् ।
कर्णपूरणतः सद्यः शूलपूयहरो रसः ॥ २१८ ॥

आकके पत्तोंको आगके ऊपर सेकके उनका रस निकाले तिसमें लहसनको पीसकर रस निचोड़े । इस रसको गरम कर कानमें डालनेसे कानका शूल मिटताहै । तथा उसमें निकलता हुआ पीप बन्द होजाताहै ॥ २१८ ॥

द्वितीय उपाय ।

शतपुष्पावचाशुंठीदारुक्काथः ससैन्धवः ।
अजामूत्रभवो हन्ति कर्णपीडां सुदारुणाम् ॥२१९॥

सोया, वच, सोंठ, देवदारु, सेंधा इन सबको बराबर ले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बकरीके मूत्रमें क्वाथ करना चाहिये । इस क्वाथको नितारकर तिसकी बूंदें कानमें डालनेसे कानके अत्यन्त कठिन रोग मिटतेहैं ॥ २१९ ॥

तृतीय उपाय ।

कवोष्णं सैन्धवोपेतमजामूत्रं तु कर्णयोः ।
क्षिप्तं सत्स्वनपूयादिशूलरोगहरं परम् ॥ २२० ॥

बकरीके मूत्रमें सेंधेको डालकर गरम करे उसकी बूंदें कानमें डालनेसे निकलतीहुई आवाज तथा पीप और शूल इन सब रोगोंका नाश होताहै ॥ २२० ॥

अथ शिरोरोगप्रतीकारः ।

वातज शिरोरोग ।

दारुकट्फलकुष्ठानां चूर्णमैरंडतैलयुक् ।
शिरोर्तिं वातजां हन्ति कांजिकेन विलेपनात् ॥२२१॥

देवदारु, कायफल, कूट, इन औषधियोंका चूर्ण कर उसमें अंडीका तेल डालकर सबको एकत्र करे और उसमें कांजी मिलाय शिरमें लेप करनेसे वायुसे हुआ शिरका रोग नाश होजाताहै ॥ २२१ ॥

कफज शिरोरोग ।

वृद्धदारुकमुस्ताश्वैरंडरास्नाजटाभयाः ।
शिरोर्तिं कफजां घ्नन्ति तप्तनीरेण लेपनात् ॥ २२२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधारा, मोथा, चित्रक, अंडके बीज, रासना, बालछड़, कूट, इन सबका चूर्णकर तिसमें पानी डालकर गरम करके शिरमें लेप करे तो कफोत्पन्न शिरोव्यथा दूर होतीहै ॥२२२॥

पित्तज शिरोरोग ।

पद्मबीजं शिवा पथ्या दूर्वोशीरकसेरुकम् ।
सहिमं लेपतो हन्याच्छिरोर्तिं पित्तसंभवाम् ॥ २२३॥

कमलगट्टा, आमला, हर्र, दूब, खश, मोथा, कपूर इन सबको बराबर ले पानीमें पीसकर लेप करनेसे पित्तोत्पन्न शिरोव्यथा दूर होतीहै ॥ २२३ ॥

सर्व प्रकारके शिरोरोगका उपाय ।

कट्फलोषणमेरंडमूलामयसमन्वितम् ।
शिरोर्तिं सकलां हन्ति तप्तनीरे विलेपनात् ॥ २२४ ॥

कायफल, मिर्च, अरंडकी जड़, कूट,इन सबको बराबर ले पानीके साथ पीस गरम करके शिरमें लेप करे तो सर्व प्रकारके शिररोग दूर होतेहैं ॥ २२४ ॥

आधाशीशीपर लेप ।

पिप्पली मारिचं पथ्या कांजिकेन तु तद्रसम् ॥२२५ ॥

पीपल, मिर्च, हर्र, इन तीनोंको कांजीमें पीसकर लेप करनेसे आधाशीशी दूर होतीहै ॥ २२५ ॥

द्वितीय लेप ।

यष्टीमधुकसंयुक्तं सारिवोग्रोषणं मतम् ।
अर्धावभेदकं हन्ति कांजिकेन विलेनात् ॥ २२६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुलैठी, सारिवा, बच, मिर्च, इन ओषधियोंको बराबर लेकर कांजीमें पीसे, इसका लेप करनेसे आधाशीशी दूर होतीहै ॥ २२६ ॥

आधाशीशीपर नस्य ।

नस्यं तु सैन्धवोपेतं संपिष्यापि च तद्रसम् २२७॥

घीके साथ सेंधा बारीक पीसकर उसका नास ले तो आधाशीशी दूर होतीहै । (दो तीन दिनतक बराबर सूँघनेसे फिर यह रोग बिलकुल ही नहीं होता । यह उपाय परीक्षित है ।) ॥ २२७ ॥

शिरके रोगपर यंत्र ।

यंत्रं षट्त्रिंशकं प्रातर्लिखित्वा भूर्जपत्रके ।
नीलसूत्रैःशिरोबद्धं शिरोर्त्ति सकलां जयेत्॥२२८॥

छत्तीसका यंत्र प्रातःकाल भोजपत्रपर लिखकर काले डोरेसे शिरमें बांधे तो अनेक प्रकारके शिररोग दूर होतेहैं । मूलग्रंथकारने छत्तीसका यंत्र इस रीतिसे बताया है॥२२८॥

षट्त्रिंशकयन्त्रम् ।

१०	१७	२	७
६	३	१४	१३
१६	११	८	१
४	५	१२	१५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी २ ने इस यन्त्रको इस प्रकारसे लिखाहै:—

१५	८	१३
१०	१२	१४
११	१६	९

शिरोरोगमें लेप ।

दार्वीं निशा विषा तुत्थं जयपालविषं समम् ।
देहपीडाविनाशाय लेपं दद्यात्तदोपरि ॥ २२९ ॥

दारुहलदी, हलदी, अतीश, नीलाथोथा, जमालगोटा, बछनाग, इनको बराबर ले पानीमें पीसकर देहमें लेप करनेसे देहसम्बन्धी पीड़ाका नाश होताहै ॥ २२९ ॥

शिरके केश बढानेका उपाय ।

महिषीदधिसंमिश्रां कर्कोटकजटां नरः ।
पिष्ट्वा शिरःप्रलिप्यातु प्रक्षाल्याभ्यंगमाचरेत् २३० ॥

भैंसके दहीमें ककोड़ेकी जड़को पीसकर शिरमें लेप करे तत्पश्चात् शिरको प्रक्षालन कर मालिश करे तो शिरके केश लम्बे होतेहैं ॥ २३० ॥

इन्द्रलुप्तरोगपर लेप ।

हस्तिदंतमसीताक्ष्यमिंद्रलुप्ते प्रलेपनम् ।
प्राज्येन पयसा कुर्यात्सर्वथा तद्विनश्यति॥२३१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाथीदांतका भस्म और रसौत इन दोनोंको बराबर ले उसमें घी और दूध मिलाय, जिसके शिरके केश गिरपड़ते हों उसके शिरमें लेप किया जाय तो शिरके केश कभी नहीं गिरते ॥ २३१ ॥

केश काले करनेका उपाय ।

अजामूत्रे भृंगराजं नीलीपत्रमयोरजः ।
पिष्ट्वा सम्यक् प्रलिम्पेद्धै केशाः स्युर्भ्रमरोपमाः २३२

भांगरा, नीलके पत्ते, लोहभस्म, इन सबको बराबर ले बकरीके मूत्रमें पीसकर लेप करनेसे शिरके बाल भ्रमरकी समान रंगवाले होजातेहैं ॥ २३२ ॥

अथ स्त्रीरोगचिकित्सा ।

प्रदरका उपाय ।

तण्डुलोदकसंपिष्टं त्वक्क्षीरी नागकेसरम् ।
हिमवालुकसंयुक्तं नाशयेत्प्रदरंद्रुतम् ॥ २३३ ॥

वंशलोचन, नागकेशर, शुद्ध किया हुआ सुगंधवाला, इन सबको बराबर ले चावलोंके धोवनके साथ पीसकर पीनेसे प्रदर नामक रोगका नाश होताहै ॥ २३३ ॥

द्वितीय उपाय ।

नागकेसरमेकं वा तंडुलाम्भः सितायुतम् ॥२३४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा केवल नागकेशर चावलोंके धोवनके साथ पीस-कर तिसमें शक्कर डाले । इसके भी पीनेसे प्रदरका नाश होताहै ॥ २३४ ॥

ऋतुके दिन चढजानेका उपाय ।

भार्ङ्गीव्योषयुतः क्वाथस्तिलजः पुष्परोधहा२३५॥

भारंगी, सोंठ, पीपल, मिर्च, काले तिल इन औषधि-योंका क्वाथ करके पीनेसे अटकाहुआ आर्तव फिर प्रारम्भ होताहै ॥ २३५ ॥

पुष्परोधहरा वर्त्ति ।

रामठं च कणा तुंबीबीजं क्षारसमन्वितम् ।
दन्तीसेहुण्डदुग्धाभ्यां वर्त्ति कृत्वा भगे न्यसेत् ।
पुष्पावरोधरोधाय नारीगर्भाद्यमुत्तमम् ॥ २३६ ॥

हींग, पीपल, कड़वी तोंबीके बीज;जवाखार, दंतीमूल, इन सबका चूर्ण कर तिसमें सेंढका दूध मिलाय बत्ती बनावै । उस बत्तीको योनिमें रखनेसे अटकाहुआ आर्तव फिर प्रारंभ होताहै । तथा गर्भ नहीं रहता ॥ २३६ ॥

योनिरोगहरा वर्ति ।

शिरीषैलाब्धिफेनं च जातीफलविडंगके ।
सनागकेसरं वर्तिर्योनिरोगहराभवेत् ॥ २३७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिरसके बीज, इलायची, समंदरका झाग, जायफल, वायबिडंग, नागकेशर इन औषधियोंको पानीमें पीस बत्तीबनाके योनिमें रखनेसे सबप्रकारके योनिरोग मिटतेहैं ॥ २३७ ॥

प्रसूति होनेका उपाय ।

क्षुद्रात्रिकटुसंयुक्तनागकेशरजं रजः ॥
गोसर्पिषा समश्नीयान्नारीप्रसवहेतवे ॥ २३८ ॥

कटेरी, शोंठ, पीपल, मिर्च, नागकेसर, इन सबका चूर्ण करके गायके घीके साथ खानेसे स्त्रीको संतानकी प्राप्ति होतीहै ॥ २३८ ॥

गर्भ करनेवाले योग ।

हिमाश्वगंधासंयुक्ता रोचना शालितंडुलाः ॥
सितापयोभ्यां संपीता गर्भसंजनना मताः॥२३९॥
गोसर्पिषार्तवे देयं नागकेसरजं रजः ॥
दुग्धौदनं चरेत्पथ्यं नारी गर्भमवाप्नुयात् ॥ २४०॥

कपूर, असगंध, गोरोचन, साठीके चावल, इन सबको बारीक पीस चूर्ण करके चार मासा चूर्ण दूध, शक्करके साथ पीनेसे गर्भ रहताहै । (इस औषधिको ऋतुकालमें देना चाहिये ।) नागकेसरका चूर्ण करके गायके घीके साथ ऋतुके समय स्त्रीको खाना चाहिये । तथा दूध भातका पथ्य करे । अर्थात् दूध भातके सिवाय और कुछ न खाना चाहिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार (१३ दिनतक) औषधिके खानेसे स्त्रीके गर्भ रहताहै ॥ २३९ ॥ २४० ॥

गर्भकारक लक्ष्मणा योग।

मूलं तस्या लक्ष्मणाया गोपयोभिस्तथा स्मृतम् २४१॥

सफेद कटेरी (लक्ष्मणा) की जड़को गायके दूधमें पीसकर स्त्रीको ऋतुकालमें खिलावै तो अवश्य गर्भ रहै ॥ २४१ ॥

सद्यःप्रसवकारकलेप।

पाठापामार्गसंलेपो भगे सद्यःप्रसूतिकृत्।
कट्यां मुंडीजटां बद्ध्वा सुखं नारी प्रसूयते २४२॥
सेहुंडपयसा लेपो नखे नाभौ प्रसूतिकृत् ॥ २४३ ॥

पाढ और चिरचिटेकी जड़को पानीमें पीसकर योनिमें लेप करनेसे तत्काल प्रसूति होतीहै गोरखमुंडीकी जड कमरमें बाँधनेसे स्त्रीको सुखसे प्रसूति होतीहै । हाथ पांवके नखोंपर तथा नाभिपर सेंढके दूधका लेपकरने से स्त्रीको शीघ्रतासे प्रसूति होतीहै ॥ २४२ ॥ २४३ ॥

गर्भपातनाशक योग।

धातक्यामलकं लज्जा मधुकं तंडुलोदकैः।
नारी पीत्वा प्रयत्नेन पद्मगर्भं निवारयेत् ॥२४४॥

आमलेके फूल, आमला, लज्जालूकी जड़, मुलहठी, इन औषधियोंका चूर्ण करे इस चूर्णको चावलके धोवनके साथ स्त्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधानीसे पिये अर्थात् आग्रह रखकर पिये, कुपथ्य न करे तो उसका गर्भ जो बारम्बार गिरजाता होय तोभी रुककर स्थित होवै

योनिसंकोचन चूर्ण ।

बदरीकर्णिकारत्वक्लोध्रं मायुफलान्वितम्
कुहेलामातृकाचन्द्रं स्फटिकासमभागिकम् ।
योनिसंकोचनं कुर्याद्द्रुतमेतन्न संशयः ॥ २४५ ॥

बेरीकी जड़की छाल, कनेरकी जड़की छाल, लोध, माजूफल, पद्मकाठ, बिसोंटेकी जड़, कपूर, फटकरी इन सबको बराबर ले चूर्ण करके योनिमें रखनेसे योनि सिकुड़जाती है ॥ २४५ ॥

द्वितीय चर्ण ।

मातृकास्फटिकालोध्रधातकीबदरीभवम् ।
मायुफलयुतं चूर्णं योनिसंकोचकारकम् ॥ २४६ ॥

बिसोंटेकी जड़, फटकरी, लोध, आमली, बेरकी गुठलीकी मींग, माजूफल इन सबको बराबर ले बारीक चूर्ण करके योनिमें रखनेसे योनिका संकोचन होताहै ॥ २४६ ॥

योनिसंकोचनमें लेप ।

जंबूजटोत्तमालोध्रधातकीमधुलेपनम् ।
योनिसंकोचनं यद्वा तक्रेण क्षालनं शुचिः ॥२४७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जामनकी जड़की छाल, लोध, धायफूल, इन सबको चूर्ण कर शहतमें मिलाय योनिमें लेप करनेसे योनिका संकोचन होताहै। अथवा छाँछसे योनिको धोवे तो स्वच्छ होकर योनि सिकुड़जातीहै ॥ २४७ ॥

स्तनकाठिन्यकारक नस्य।

आर्त्तवस्नानदिवसात् षोडशाहं निरन्तरम्।
तंडुलोदकनस्येन काठिन्यं कुचयोः स्थिरम् २४८॥

जिस दिनसे स्त्री रजस्वला हो उस दिनसे १६ दिनतक बराबर चावलोंके धोवनका नास ले तो स्तन कठिन होतेहैं ॥ २४८ ॥

स्तनशोथघ्न लेप।

कुमारिकारसैर्लेपो हरिद्रारजसान्वितः।
कवोष्णं स्तनशोथस्य नाशनं सर्वसम्मतम् २४९॥

घीकांरके पट्ठेके रसमें हलदीका चूर्ण डालकर गरम करके स्तनकी सूजनपर लेप करे तो सूजनका नाश होताहै २४९॥

स्तनपाकहर तेल।

स्तनपाकहरं निंबतैलतुल्यं न चापरम्॥ २५० ॥

निबोलियोंके तेलकी समान और कोई औषधि स्तनका पाक मिटानेवाली नहीं है। अर्थात् स्तन पकते हों तो उनपर निबोलियोंका तेल चुपड़ना चाहिये। यह उपाय बहुत अच्छा है ॥ २५० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालरोग चिकित्सा ।

शृंगीमाद्रीकणाचूर्णं शिशुर्मधुयुतं लिहेत् ।
कासश्वासविषच्छर्दीर्हन्यादेवाश्वसंशयम्॥२५१॥

काकड़ाशृंगी, काला अतीस, पीपल, इन औषधियोंका चूर्ण करके शहतके साथ बालकको चटाना चाहिये । तिससे बालककी खाँसी, दमा, विष, वमन, यह सर्वरोग निस्सन्देह शीघ्रतासे मिटजातेहैं ॥ २५१ ॥

अथ पुस्त्वरोगचिकित्सा ।

लिंगस्थौल्यका उपाय ।

कर्णिकारजटाभंगा धत्तूररसपेषिता ।
छायाशुष्का वटी कार्या स्वमूत्रेणानुलेपयेत् ॥
दीर्घं स्थूलं च कठिनं लिंगं तेनाभिजायते २५२॥

अमलतासके बड़े वृक्षकी जड़की छाल और भांगको धतूरेके रसमें पीसकर गोली बनाय छायामें सुखावे । फिर उन गोलियोंको अपने मूत्रमें घिसकर लिंगपर लेप करे तो उपस्थ लंबा, स्थूल और कठिन होगा ॥ २५२ ॥

द्वितीय उपाय ।

अश्वगंधा च कुष्ठाग्निगजपिप्पलिकारजः ।
महिषीसर्पिषा लिप्तं लिंगस्थौल्यकरं परम् ॥५३॥

असगन्ध, कूठ, चित्रक, गजपीपल, इनका चूर्ण करके भैंसके घीके साथ मिलाय उसका लेप लिंगपर करे तो लिंग अति स्थूल होताहै ॥ २५३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिंगशैथिल्यहर लेप ।

अश्वगन्धागजकणारजनीपारदैरपि ।
अहिफेनामृतं धूर्त्तबीजं जातीफलं समम् ॥ २९४
सर्पिषा लिंगलेपोऽयं शैथिल्यहरणःपरः ।

असगंध, गजपीपल; हलदी, पारा; अफीम, बच्छनाग, धतूरेके बीज, जायफल इन सबको बराबर लेकर बारीक चूर्ण करना चाहिये । इस चूर्णको घीमें मिलाय लिंगपर लेप करनेसे लिंगकी शिथिलता दूर होतीहै ॥ २५४ ॥

शुक्ररोधिनी वर्ति ।

अहिफेनभवा वर्तिर्लिंगगा शुक्ररोधिनी ॥ २९५ ॥

अफीमकी बत्ती करके लिंगके छेदमें रखनेसे वीर्य अटक जाताहै, बाहर नहीं आता ॥ २५५ ॥

वाजीकरण प्रयोग ।

गोक्षुरेक्षुरबीजानि वाजिगंधा शतावरी ।
मुशली शाल्मलीपुष्पं भार्ङ्गी शुंठी च वानरी२९६
बला श्लेष्मातकं मोचरसस्तुल्यं तु चूर्णितम् ।
सितामधुयुतो लेहो वाजीकरणमुत्तमम् ॥ २९७ ॥

गोखरू, तालमखाना, असगंध, शतावरी, सफेद मूसली, सेमलके फूल, भारंगी, सोंठ, कौंचके बीज, खरेंटी, ल्हसोड़ा, मोचरस, इन सब औषधियोंको बराबर लेकर चूर्ण करे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस चूर्णको शहत तथा शक्करके साथ चाटना चाहिये। ऊपरसे गायका दूध पिये। इससे वीर्यकी वृद्धि होतीहै ॥ २५६ ॥ २५७ ॥

लिंगदाढर्यार्थ तेल।

शिलाटंकणकुष्ठैलामालतीदलजै रसैः।
तैलं पक्कं तदभ्यंगाल्लिंगदाढर्यमवाप्नुयात् ॥२५८॥

मैनसिल, सुहागा, कूट, इलायची, मालतीके पत्तोंका रस, इन सब औषधियोंको कुचलकर तिलके तेलमें डालकर तेलको पकावे और उसका उपस्थ इंद्रियमें मालिश करे तो दृढता होगी ॥ २५८ ॥

शुक्रस्तम्भनवृद्धिदा गुटिका।

कुंकुमं दरदं जातीफलं म्लेच्छजवानिका।
मस्तकी वानरीबीजं लवंगेक्षुरतुंबुरुम् ॥ २५९ ॥
त्वक्पत्रं च समं सर्वं तुर्यांशमहिफेनकम्।
भंगारसैर्गुटी बद्धा शुक्रस्तम्भनवृद्धिदा ॥ २६० ॥

केशर, शिंगरफ (शुद्ध), जायफल, खुरासानी अजवायन, रूमी मस्तकी, कौंच, लवंग, तालमखाना, तुंबरके बीज, तज, तमालपत्र, इन सबको बराबर ले। सबसे चौथाई भाग अफीमका लेना। फिर सबको एकत्र करके भांगके रसमें तिसकी गोली एक २ मासेकी बनावे। प्रतिदिन एक गोली खाय तो वीर्यका स्तम्भन और वृद्धि होतीहै॥ २५९ ॥ २६० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धातुपुष्टिकर चूर्ण ।

मुशली शाल्मलीमूलं सूक्ष्मं दृषदि पेषितम् ।
सितामधुयुतं पीतं धातुपुष्टिकरं परम् ॥ २६१ ॥

सफेद मूसली, सैमलके फूल इन दो औषधियोंको पत्थरके ऊपर खूब बारीक पीसकर चूर्ण करे। आठ मासा चूर्ण लेकर शहत तथा शक्करके साथ खाय। (फिर उसके ऊपर गरम किया-हुआ गायका दूध पिये) इससे अत्यन्त धातुपुष्टि होतीहै२६१॥

स्वेददौर्गन्ध्यहर उद्वर्तन ।

चंदनं रजनीमुस्ताकर्पूरागुरुकेसरैः ।
जटासांसीसरुक्सटीपद्मकेसरलोध्रकम् ॥ २६२ ॥
शिवाकुलिंजनं पिष्ट्वा कुर्यादुद्वर्त्तनं नरः ।
मेदःस्वेदादिदौर्गंध्यनाशनं मुनिभाषितम्॥२६३॥
पथ्याबीजाम्लिकाबिल्वं मुस्तं नीरेण पेषितम् ।
कुचयोर्मुनिभिः प्रोक्तं स्वेददौर्गन्ध्यनाशनम्२६४॥
शिरीषपत्रं नलदस्त्वग्लोध्रं नागकेसरम् ।
जलेनोद्वर्त्तनं गात्रे स्वेददौर्गन्ध्यनाशनम् ॥२६५॥

चंदन, हलदी, मोथा, कपूर, अगर, केशर, बालछड़, कूठ, कचूर, कमलगट्टा, अथवा कमलका केशर, लोध, आमला, पानकी जड़ इन सबको बराबर ले पानीके साथ पीसकर शरीरपर लगाना चाहिये। शरीरमें मैल और पसीना आदिसे जो दुर्गन्धि उत्पन्न होतीहै वह इस औषधिसे नाशको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त होतीहै । इसप्रकार वैद्यकशास्त्रके जाननेवाले मुनिलोग कहतेहैं ॥ हर्रे, अमचूर, बेल, मोथा, इन सबको बराबर ले पानीके साथ पीसकर छातीपर लगानेसे स्तनके ऊपर पसीना आकर जो दुर्गन्ध पैदा होती है, उसका नाश होजाताहै । यह मुनियोंने कहा है । सिरसके पत्ते, खश, तज, लोध, नागकेशर, इन सबको बराबर ले पानीके साथ पीसकर शरीरपर उद्वर्तन (उबटन) करनेसे पसीनेसे उत्पन्न हुई दुर्गन्धिका नाश होताहै ॥ २६२ ॥ २६३ ॥ २६४ ॥ २६५ ॥

मुखदौर्गन्ध्यहरा गुटिका ।

घनैलाकेसरं बिल्वं जातीफलघनेदलम् ।
त्वक्स्थौणेयं च मधुना गुटिकास्ये विधारिता ॥
दौर्गन्ध्यमास्यगं हन्यादपि मद्यादिसंभवम् ॥२६६॥

मोथा, इलायची, केशर, बेल, जायफल, कपूर, तमालपत्र, तज, पोदीना, इन सबको बराबर लेकर शहतके साथ इनकी गोली बांधे । इस गोलीको मुखमें रखनेसे जब मद्यकी भी दुर्गन्ध दूर होती है तो फिर दूसरी दुर्गन्धके दूर होनेमें क्या आश्चर्य है ॥ २६६ ॥

ग्रंथकारका आशीर्वाद ।

नयनसुखमनोमहोत्सवस्य प्रभवति मात्रमिदं
शिवप्रणीतैः । अतिसुगमसुसिद्धयोगवाक्यै
रचितवतोंजनमस्तु सर्वतुष्ट्यै ॥ २६७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेत्रकी पीड़ावालेको आंखमें अंजित अंजन जिस प्रकार आराम देताहै, वैसे ही यह चिकित्सारूपी अंजन भी नेत्रोंको आराम देनेवालाहै। अर्थात् चिकित्सांजन ग्रंथ अपनी उत्तमताकेलिये संतोषदायक होनेसे मेरे नेत्रोंको भी आनन्दका देनेवाला है। और मनके महोत्सवको देताहै। "भाव यह है कि साधारण मनुष्य भी कोई उत्तम कार्य करके आनंद प्राप्त करताहै, तैसे ही इस ग्रंथको रचकर मैंने आनन्द पाया है।" शिवजीके कहे अति सुगम सुसिद्ध और अवश्य फलदायक प्रयोग बतानेवाले बचनोंका आश्रय लेकर मैंने यह ग्रंथ बनाया है। बस इसही कारणसे यह सर्वोत्तम है। ऐसा यह चिकित्साञ्जन ग्रंथ सर्व लोकोंको संतोष देनेवाला होवे ॥ २६७ ॥

इति श्रीविद्वद्वरविद्यापतिविरचितचिकित्साञ्जनस्य पण्डित बलदेवप्रसादमिश्रकृतभाषाटीका सम्पूर्णा।

ग्रन्थ समाप्त।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बंबई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रय्य पुस्तकें (वैद्यकग्रंथाः)

नाम. — की. रु. आ.

सुश्रुतसंहिता–सान्वयसटिप्पण सपारिशिष्ट भाषा-
टीका समेत १२–०
" तथा उपरोक्त अलंकारों समेत सूत्रस्थान
प्रथमभाग ३–०
" " " निदान शारीरस्थान
द्वितीयभाग २–८
" " " चिकित्सा व कल्प-
स्थान तृतीयभाग ३–८
" " " उत्तरतंत्र चतुर्थभाग ३–८
" " " केवलशारीरस्थान १–०
चरकसंहिता–वैद्यपञ्चानन रामप्रसादकृत भाषाटीका
समेत ८–०
हारीतसंहिता–पंडित रविदत्तकृत भाषाटीका सहित ३–०
भावप्रकाश–मूल और लालाशालिग्रामकृत
भाषाटीका ७–०
धन्वंतरी–वैद्यक–लालाशालिग्रामवैश्यकृत भाषा-
टीका समेत जिसमें समस्त रोगोंका निदान
कारण लक्षण और चिकित्सक औषधि संग्रह कर
लिखा है ५–०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

04694

नाम. की. रु.,आ.

अष्टांगहृदय- (वाग्भट) वाग्भटविरचित-पं० रविदत्तकृत भाषाटीकासहित और पंडित ज्वाला प्रसाद मिश्र संशोधित। ८-०

अष्टांगहृदयवाग्भट-मूल-मोटा अक्षर २-८

शार्ङ्गधरसंहिता-मूल और पं० दत्तरामचौबेकृत भाषाटीका समेत ग्लेज २-८

तथा रफ २-०

वैद्यरहस्य-मूल और पंडित दत्तराम चौबे कृत भाषाटीका समेत संपूर्ण रोगोंकी चिकित्सा भलीप्रकार वर्णितहै .... [illegible]-०

बृहन्निघण्टुरत्नाकर--मूल पंडित दत्तराम चौबेकृत संकलित और भाषाटीकासहित जिसमें शारीराध्याय यंत्राध्याय शस्त्रावचारणाध्याय योग्य सूत्राध्याय अष्टविधशस्त्रकर्माध्याय तथा दूसरा-भाग क्षारपाक विधि अग्निकर्म दोषधातुमलवृद्धि दोषवर्णन ऋतुचर्या दिनचर्या रात्रिचर्या नाडी-दर्पणादि वर्णन प्रथम भाग ३-०

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बंबई.

पुस्तकालय गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

श्री धर्मदत्त वैद्य संग्रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानेकी परमोपयोगी, स्वच्छ, शुद्ध और सस्ती पुस्तकें।

यह विषय आज ४५।४६ वर्षसे अधिक हुआ भारतवर्षमें प्रसिद्ध है कि, इस छापाखानाकी छपी हुई पुस्तकें सर्वोत्तम और सुन्दरप्रतीत तथा प्रमाणित हुईहैं। इस यन्त्रालयमें प्रत्येक विषय की पुस्तकें जैसे--वैदिक, वेदान्त, पुराण, धर्मशास्त्र, न्याय, मीमांसा, ..., सांप्रदायिक, काव्य, अलंकार, चम्पू, नाटक, कोष, वैद्यक, तथा स्तोत्रादि संस्कृत और हिन्दीभाषाके ... अवसरपर बिक्री के अर्थ तैयार रहतेहैं। शुद्धता, स्वच्छता तथा कागजकी उत्तमता और जिल्द की बँधाई देशभरमें विख्यात है। इतनी उत्तमता होनेपर भी दाम बहुत ही सस्ते रक्खे गये हैं और ... भी पृथक् काट दिया ... है। ऐसी सरलता ... मिलना असंभवहै। संस्कृत तथा हिन्दीके ... अपना २ आवश्यकतानुसार पुस्तकों ... करनाचाहिये। ऐसा उत्तम, सस्ता और ... दूसरी जगह मिलना असम्भव है)॥ भेजकर 'सूचीपत्र' मँगा देखो॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना--

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना खेतवाडी-मुम्बई.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar